सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
**मासिक सच्चा राही**
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

## सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | रु0 12/= |
| वार्षिक | रु0 120/= |
| विशेष वार्षिक | रु0 500/= |
| विदेशों में (वार्षिक) | 30 युएस डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

**"सच्चा राही"**

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoln Computers- 9838644587

हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2010 वर्ष 08 अंक 12

## मुवह्हिद

है माँग हम से कि वन्दे मातृम मिल कर के हम गाएं
रहे तौहीद से हट कर यहाँ का शिर्क अपनाएं

तो सुन लो साफ हमसे हम यहाँ जो रोज़ गाते है
सबक तौहीद का लो साफ़ सब को हम सुनाते हैं

मुवह्हिद के क़दम पर सोना चान्दी डालकर देखी
खुली तलवार फिर तुम उस के सर पर तान कर देखो

न लालच माल का उस को न डर तलवार का उसको
नहीं तौहीद से डिगता मुवह्हिद जान लो उसको

तो वन्दे मातृम का गीत हरगिज हम न गाएं गे
हुए मजबूर इस पर हम तो सर अपना कटाएं गे

वतन महबूब हम को है वतन को जान दे देंगे
वतन को जान दे देंगे मगर ईमान ना देंगे

हारून रशीद

आपके पते के साथ जो ख़रीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

# विषय एक दृष्टि में


| | | |
|---|---|---|
| बात दुसरी दुन्या की | डा0 हारून रशीद सिद्दीकी | 3 |
| कुर्आन की शिक्षा | मौ0 मु0 मंजूर नोमानी | 5 |
| प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम | 6 |
| मुस्लिम समाज | मौ0 राबे हसनी | 7 |
| कुर्आन की अअ़ला और मरकजी तअलीम तौहीद | मौ0 अब्दुल माजिद दरयाबादी | 9 |
| जग नायक | मौ0 (स0) म0 राबे हसनी | 10 |
| मुसलमानों का दीनी मौकफ वाजे है | हबीबुल्लाह आजमी | 13 |
| भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्थान | उमामा साबिरी | 14 |
| खारा पानी से काला पानी | मु0 इलयास नदवी भटकली | 16 |
| जिक्रे मीलादुन्नबी | इदारा | 18 |
| इस्लामी अखलाक | मौ0 स0 अब्दुल्लाह हसनी | 21 |
| आप किस तरह से पायलेट बन सकते है? | तसनीम फातिमा | 23 |
| आप के प्रश्नों के उत्तर | मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी | 24 |
| सैलानी की डायरी | मो0 हसन अंसारी | 26 |
| दीन व दुनिया का फर्क | एम0 हसन अन्सारी | 27 |
| गवर्नर का अभिमीन पुत्र | खुर्रम मुराद | 28 |
| मंदबुद्धि बीमारी नहीं | डॉ0 ए0के0 अरूण | 30 |
| भारत का संक्षिप्त इतिहास | इदारा | 32 |
| स्वतंत्रता संग्राम में | मौ0 अब्दुल वकील नदवी | 36 |
| हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण | इदारा | 39 |
| अतंर्राष्ट्रीय समाचार | डॉ0 मुईद अशरफ नदवी | 40 |

# बात दूसरी दुन्या की

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

बहुत दिनों की बात है, एक मुस्लिम डाक्टर जो टी0बी के इलाज में महारत रखते थे, और फर्स्ट स्टेज के मरीज़ों का अचूक इलाज करते थे, अब तो इलाज में तरक़्क़ी हुई एक मअमूली (साधारण) आदमी भी जानता है कि टी0बी0 का इलाज मुमकिन है लेकिन अब से 50, 60 साल पहले टी0बी0 को ला इलाज समझा जाता था, उस वक़्त भी कुछ स्पेशलिस्ट डाक्टर टी0बी0 का कामयाब इलाज करते थे जैसे लखनऊ में डॉ0 फ़रीदी और डॉ0 अब्दुल हमीद साहिबान उन ही में वह डाक्टर भी थे जिन का मैं ने ज़िक्र किया। जब तब उन से मुलाक़ात रहती थी। एक रोज़ वह मुझ से अज़ख़ुद (स्वतः) कहने लगे कि बेशक आप लोग नमाज़ पढ़ते हैं, अल्लाह आप को जन्नत देगा लेकिन हम लोग जो अपना बड़ा वक़्त लोगों की जान बचाने पर लगाते हैं क्या यह नेकी नहीं? क्या इस के बदले में हम को जन्नत न मिल सकेगी? मैंने जवाब दिया ज़रूर मिलेगी लेकिन जनाब डाक्टर साहिब फ़राइज़ की अदायगी का बदल किसी और नेकी में नहीं, फ़राइज़ की अदायगी की कोताही की सज़ा भुगतना ही होगी। कहने लगे आप ने जितनी देर में ज़ुहर के फ़र्ज़ अदा किये उतनी देर में मैंने तीन मरीज़ देख लिये। मैंने कहा आप ने ठीक किया लेकिन आप अगर फ़र्ज़ अदा कर के मरीज़ देखते तो भी यह काम हो सकता था या अगर मरीज़ को देखना बर वक़्त ज़रूरी था तो आप बअ्द में फ़र्ज़ अदा करते लेकिन फ़र्ज़ तर्क कर के किसी भी नेकी से उस का बदल नहीं हो सकता। डाक्टर साहिब ने कहा मैं समझता हूँ कि किसी मरीज़ की जान बचाने की कोशिश करना नमाज़ अदा करने से कम नहीं इस लिये अल्लाह तआला नमाज़ की कोताही को ज़रूर मुआफ़ कर देगा।

मैंने कहा डाक्टर साहिब बेशक आप का काम बहुत ऊँचा है लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी का बदल हरगिज़ नहीं है वैसे अल्लाह तआला क़ादिरे मुतलक़ है जिसे चाहे बख़्श दे लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ का छोड़ना बहुत सख़्त है फिर इस पर फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी और ख़िदमते ख़ल्क़ के मुवाज़ना में अपना फ़लसफ़ा लगाना उस से सख़्त बात है। जनाब डाक्टर साहिब! इस तरह के ख़यालात अस्ल में दूसरी दुन्या की सहीह मअ्लूमात (ज्ञान) न होने के सबब है। दूसरी दुन्या अर्थात मरने के बअ्द की दुन्या की मअ्लूमात का ज़रीआ अब सिर्फ़ और सिर्फ़ आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तअ्लीमात (शिक्षाओं) में हैं।

दूसरी दुन्या कितनी लम्बी होगी, अल्लाह की रज़ा कैसे हासिल होगी? जन्नत क्या है? जहन्नम क्या है? उस से पहले बरज़ख़ क्या हैं? क़ब्र में राहत या क़ब्र के अज़ाब के असबाब क्या हैं? इन सारी बातों को न कोई डाक्टर बता सकता है न इंजीनियर न साइन्स दाँ, न फ़लसफ़ी वहाँ की मअ्लूमात का ज़रीआ सिर्फ़ अंबिया अलैहिमुस्सलाम रहे हैं और अब आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तअ्लीमात हैं।

जो लोग इस्लाम को सिर्फ़ इस दुन्या में मुहज़्ज़ब ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़रीआ समझते हैं वह बड़ी भूल में हैं इस्लाम अस्ल में उख़रवी ज़िन्दगी (दूसरी दुन्या) में नजात का ज़रीआ है, अल्लाह की नाराज़गी और जहन्नम से बचाव का ज़रीआ है, अल्लाह की रज़ा और जन्नत का इनआम दिलाने का जरीआ है। साथ ही इस दुन्या

में भी हयाते तय्यिबा (शान्ति मय जीवन) देने का वअ़्दा है।

ख़ुदा की पनाह! एक साहिब कहने लगे कि करोड़ो लोग ऐसे गुज़रे हैं जिन्होंने एक पैदा करने वाले को भी माना है और साथ ही दूसरी ताक़तों के सामने भी झुके हैं, दूसरी ताक़तों को अल्लाह का मुख़ालिफ नहीं माना बल्कि अल्लाह का मुआविन (सहयोगी) माना वह कहने लगे मैं नहीं समझता इस में अल्लाह का क्या नुक़्सान हो गया, और ऐसा शख़्स क्यों काबिले सज़ा (दण्डनीय) है? मैं ने कहा यह तो आप का फ़लसफ़ा है, अगर आप का सज़ा व जज़ा पर ईमान है तो आप सज़ा व जज़ा देने वाले का ज़ाबता लाइये मालिके यौमिद्दीन का तो साफ एअ़्लान है कि : "बेशक अल्लाह अपने साथ साझीदार बनाने को मुआफ़ न करेगा, इस के अ़लावा जिस गुनाह (पाप) को चाहेगा मुआफ़ कर देगा। (अन्निसा : 48)

कुछ फ़ारवर्ड लोग यह समझ बैठे हैं कि अगर कोई किसी बुत के सामने इस लिये सर टेक देता है ताकि वहाँ के बुत पुजारियों के दिल में अपना मक़ाम बना सके, तो इस में क्या ह़रज है? फिर इस अ़मल से किसी को कोई नुक़सान तो नहीं पहुँचा, इसी तरह किसी वफ़ात पाए हुए ऐसे महा पुरुष की क़ब्र (सामाधि) पर सर झुका देता है जिसकी क़ब्र पर हज़ारो लोग सर झुकाते हैं तो इस से किसी को नुक़्सान तो नहीं पहुँचता जब कि इस से फ़ाइदा यह होता है कि ऐसा करने वाली पबलिक उस की हम नवा बन जाती है। यह सोच उन ही लोगों की है जो यह समझते हैं कि इस्लाम की बुन्याद इन्सानीयत के लिये इन्सान की अच्छी सोच पर है जब कि इस्लाम की बुन्याद उख़रवी ज़िन्दगी की नजात पर है। उस उख़रवी ज़िन्दगी की मअ़्लूमात इंन्सानी अ़क़्ल की पहुँच से बाहर है। कुछ लोगों का कहना है कि जिस काम से किसी इन्सान को बल्कि किसी जानदार को तकलीफ़ पहुँचे वह गुनाह (पाप) है और जिस से किसी को फ़ाइदा पहुँचे, सुकुन मिले वह सवाब (पुन्न) का काम है। यह इस्लाम की तअ़्लीम हरगिज़ नहीं है, इस्लाम तो वह है जो हम को ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रीअे मिला, अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी के ज़रीअे जिस काम को गुनाह बताया वह गुनाह है और जिसे सवाब बताया वह सवाब है। अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म दिया कि "कह दीजिये यह ह़क़ (इस्लाम) तुम्हारे रब की तरफ़ से है। पस जिस का जी चाहे इस पर ईमान लाए और जिस का जी चाहे इन्कार कर दे (इन्कार करने वाले) जालिमों के लिये हम ने आग (जहन्नम की आग) तय्यार कर रखी है, जिस की क़नातें उन को घेरे होंगी और जब वह (प्यास की शिद्दत से) फ़रयाद करें गे तो उन की फ़रयाद रसी ऐसे पानी से की जाए गी जो (ख़ूब गर्म) तेल की तलछट की तरह़ होगा जो उन के मूहों को झुलस देगा, कैसा बुरा पानी होगा और जहन्नम कितना बुरा ठिकाना होगा। बेशक जो लोग ईमान लाए और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तअ़्लीमात के मुताबिक़ भले काम किये तो हम ऐसे लोगों के कामों को अकारत न करेंगे जो अच्छे ढंग से काम करे, ऐसे लोगो के लिये सदा बहार बाग़ हैं (उन में उन के महल होंगे) जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उन में उन को सोने के कंगन पहनाए जाएं गे, वह वहाँ मोटे और बारीक रेशम के हरे रंग के कपड़े पहनें गे, वह वहाँ मसेहरियों पर तक्या लगाए बैठे होंगे, क्या ही अच्छा बदला है और जन्नत क्या अच्छा ठिकाना है। (अलकह्फ़ : 29–31)

ध्यान देने की बात है जब मुशरिक जहन्नम में ठकेला जाएगा तो क्या वहाँ उस की यह मंतिक़ चलेगी कि हम ने अगर बुत को सजदा कर लिया, या समाधि में लेटे महा पुरूष के आगे गाथा टेक लिया था

**शेष पृष्ठ 8**

# क़ुरआन की शिक्षा

**मौलाना मु० मंजूर नोमानी**

सुर–ए–जुमर में इरशाद है :

तर्जमा : ऐ पैग़म्बर! (आप मेरी तरफ़ से मेरे बन्दों से) कहिए, कि ऐ मेरे वे बन्दो जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क कर के) अपने नफ़्सों (जानों) पर जुल्म किया है, खुदा की रह्मत से तुम (कभी) ना उम्मीद मत हो (और यह खियाल मत करो कि तुम्हारी बखशिश नहीं हो सकती। अगर तुम शिर्क व कुफ़्र और बगावत की जिन्दगी से निकल आओ और तौबा कर लो, तो बख्शिश का दरवाजा तुम्हारे लिये भी खुला हुआ है) अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह बख्श देगा, वह बड़ा बख्शने वाला और बहुत मेहरबान है। (पस अगर बख्शिश चाहते हो तो तौबा कर लो) और रूजूअ हो जाओ अपने रब की तरफ, और उस की फर्मा बरदारी इखतियार कर लो इस से पहले कि (कुफ़्र व शिर्क की पादाश में) तुम पर अजाब आ जाये, और फिर किसी तरफ से तुम को कोई मदद न मिल सके। और (बगावत व गुनाह वाली जिन्दगी छोड़ के) पैरवी इख्तियार कर लो, उस बेहतरीन शरीअत की जो तुम्हारी तरफ तुम्हारे पर्वर्दगार की तरफ से उतारी गयी है, इस से पहले कि अचानक तुम पर खुदा का अजाब आ पड़े, और तुम्हें इस का खियाल भी न हो। और देखो ऐसा न हो कि (कल कियामत में तुम में से) कोई शख्स (हस्रत से) कहे कि, हाय अफ्सोस! मेरी उस कोताही पर जो मैं ने अल्लाह की जनाब में की, और मैं तो हंसी–मजाकही करता रहा। या कोई यूं कहे कि अगर अल्लाह तआला मुझे हिदायत देता, तो मैं भी मुत्तकियों में से होता, या कोई शख्स (उस दिन) अजाबे–इलाही देख कर कहने लगे, काश! दुन्या में फिर मुझे एक बार जाना मिल जाता तो मैं बड़े नेक बन्दों में से हो जाता। (अल्लाह तआला की तरफ से कहा जायेगा) हाँ बेशक मेरी आयतें तेरे पास पहुँची थीं तो तू ने उन को झुटलाया और घमंड का रवैया इख्तियार किया और तू काफिरों में ही रहा। और तुम देखोगे कियामत के दिन उन लोगों के चहरे बिल्कुल सियाह (काले होंगे) जिन्हों ने झूट बोला अल्लाह पर (जैसे, जिन्होंने अपने मुशरिकाना अकीदों व अमलों या दूसरे जाहिलाना रसमों (प्रथाओं) के बारे में कहा कि हमें अल्लाह ने ही ऐसा करने का हुक्म दिया है, तो ऐसे सब मुफ्तरियों (आरोपक) के चेहरे कियामत के दिन बिलकुल काले होंगे और उन पर लानत बरसती होगी) क्या इन तकब्बुर (घमंड) करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं है। और जिन बन्दों ने (कुफ़्र व मासियत की जिन्दगी छोड़ के) तक्वा को अपना शिआर (तरीका) बनाया, अल्लहा तआला उन को पूरी कामयाबी के साथ (जहन्नम से) नजात देगा। उन को (जरा भी) तकलीफ़ नहीं पहूँचेगी, और न वे रंज व गम में मुब्तला होंगे। अल्लाह हर चीज़ का खालिक है और हर चीज उसी के सुपुर्द (समर्पित) है। जमीन व आसमान की चाबियाँ उसी के इख्तियार में हैं। और जो लोग अल्लाह की बातों को नहीं मानते वे बड़े खसारे (नुकसान) में रहेंगे ऐ पैगम्बर! आप (उन मुश्रिकों से) कहिये, ऐ जाहिलो हक़ीक़त न पहचान ने वालो! क्या तुम मुझ से फर्माइश करते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की भी इबादत करूं? और वाक़िआ यह है कि आप की तरफ भी और आप से पहले जो पैगम्बर भेजे गये उन सब की तरफ भी वही के जरीये यह पैगामे–हिदायत भेजा जा चुका है कि ऐ इन्सान! अगर तू ने शिर्क किया तो तेरा सब किया कराया गारत हो जायेग, और तू बड़े खसारे वालों में से हो जायेगा (पस हरगिज शिर्क के पास न जाओ) बल्कि सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करो और उसके शुक्र गुजार बन्दों में से हो जाओ। और (अफसोस!) उन्होंने खुदा की वैसी अजमत न की जैसी अजमत उसकी करनी चाहिये थी।

**शेष पृष्ठ 9**

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

### हज़रत खदीजः (र0) के हक में बशारत

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन अबी औफ़ा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत खदीजः (र0) को जन्नत में एक मोती के घर की बशारत दी जिसमें न शोर व गुल होगा और न तकान।

### हज़रत अबू बक्र (र0) व उमर (र0) को जन्नत की बशारत

हज़रत अबू मूसा (र0) अशअरी से रिवायत है कि मैं अपने घर से वजू करके निकला। और यह तय कर लिया कि आज मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहूँगा। फिर मस्जिद में आया और नबी (स0) के मुतअल्लिक पूछा, लोगों ने कहा कि फलाँ जगह तश्रीफ ले गये हैं। तो मैं आँ हज़रत (स0) के नकशे कदम पर चला और आपके मुतअल्लिक पूछता जाता था। यहाँ तक कि हुजूर (स0) अरीस के कुएं पर पहुँचे। मैं दरवाजे पर बैठ गया। जब आपने अपनी हाजत से फरागत पायी और वजू किया तो मैं आपके पास खड़ा हो गया। हुजूर (स0) कुएं की जगत पर पाँव लटाकये बैठे थे और पिन्डलियाँ खोल दी थीं। मैंने सलाम किया और पलट के दरवाजे पर बैठ गया और इरादा किया कि आज रसूलुल्लाह (स0) का दरबान बनूंगा। इतने में हज़रत अबू बक्र (र0) आये और उन्होंने दरवाजे को खटखटाया। मैंने कहा कौन? बोले अबू बक्र (र0)। मैंने कहा जरा ठहरिए। फिर हुजूर (स0) से जाकर अर्ज किया या रसूलुल्लाह अबू बक्र (र0) इजाजत चाहते हैं। आपने फरमाया, इजाजत दे दो, और जन्नत की बशारत देते हैं। वह आये और आपकी सीधी जानिब जगत पर बैठ गये और कुएं में पाँव लटका दिये और पिण्डली खोल दीं जैसे हुजूर (स0) ने किया था। फिर मैं पलट कर अपनी जगह बैठ गया। मैं अपने भाई को छोड़ आया था। वह वजू कर रहे थे, मेरे पीछे आने वाले थे। मैंने कहा, अगर अल्लाह तआला फलाँ के साथ (फलाँ से अपना भाई मुराद है) भलाई का इरादा करेगा तो उसको ले आयेगा। नागाह किसी ने दरवाजे को हरकत दी। मैंने कहा, कौन? बोले उमर (र0) बिन् अलखत्ताब, मैंने कहा जरा तवक्कुफ़ कीजिए। फिर मैंने हुजूर को आकर सलाम किया और अर्ज किया। उमर (र0) आये हैं। इजाजत चाहते हैं। आँ हज़रत (स0) ने फरमाया, इजाजत दे दो और जन्नत की बशारत भी दो। मैं पलटा और कहा आइए और आपको रसूलुल्लाह (स0) जन्नत की बशारत देते हैं। वह आये और आपके बायें तरफ जगत पर बैठ गये। और अपने पाँव कुएं में लटका दिये। फिर मैं पलट कर अपनी जगह बैठ गया और दिल में कहने लगा, अल्लाह तआला अगर फलाँ के साथ (भाई मुराद है) भलाई का इरादा करेगा तो उनको ले आयेगा। फिर दरवाजा थपथपाने की आवज आयी। मैंने कहा कौन? बोले उसमान (र0) बिन अफ्फान। मैंने अर्ज़ किया जरा रुक जाइए। फिर मैं आपके पास आया और खबर दी कि उसमान (र0) आये हैं और इजाजत चाहते हैं। आपने फरमाया, इजाजत दो और एक आजमाइश के साथ जो उनको पहुँचेगी जन्नत की बशारत दो। मैं आया और बोला आइए आपको आँ हज़रत (स0) जन्नत की बशारत देते हैं एक आजमाइश के साथ जो आपके पहुँचेगी। वह आये तो कुएं की जगत भर चुकी थी। वह उन हजरात के सामने दूसरी जानिब बैठे।

(बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि मुझको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरवाजे की हिफाजत का हुक्म दिया और उसमान (र0) को जब मैंने जन्नत की बशारत दी तो उन्होंने अल्लाह की तारीफ की और बोले अल्लाह मददगार है।

### मुवह्हिद को जन्नत की बशारत

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि हज़रत अबू बक्र (र0) व हज़रत उमर (र0) और भी कुछ लोग रसूलुल्लाह (स0) के गिर्द बैठे थे।

शेष पृष्ठ 12

समाज सुधार

# मुस्लिम समाज
# जिम्मेदारियाँ और तकाज़े

**– मौ० राबे हसनी**

नदवा के सहाफत अर्थात पत्रकारिता संकाय का एक विभाग सामाज–सुधार का है। नदवा के महाप्रबन्धक मौलाना राबे हसनी समाज के बिगाड़ को दूर करने का प्रयास, अपनी लेखिनी और प्रवचनों से करते रहे हैं। इसी सिलसिले की उन की एक किताब ''मुस्लिम समाज जिम्मेदारियाँ और तकाजे'' सन् 2009 में प्रकाशित हुई है जिसकी उपयोगिता (इफादीयत) को ध्यान में रखते हुए किताब का हिन्दी अनुवाद किस्तवार 'सच्चा राही' प्रकाशित कर रहा है। अनुवाद 'सच्चा राही' के सह–सम्पादक मो0 हसन अंसारी का है।)

## आमुख

इस्लाम में मजहबी जिन्दगी को सिर्फ इबादत के दायरे ही में सीमित नहीं रखा गया है। बल्कि मानव–जीवन के अन्य तमाम पहलूओं को भी धार्मिक संरक्षता प्रदान की गयी है। और यह सरपरस्ती और मार्गदर्शन इन्सानों के पैदा करने वाले व मालिक जग के पालनहार की तरफ से कामयाबी का जरियः करार दिया गया है। दुनिया के अन्य धर्मों में भी जो धार्मिक निर्देश दिये जाते हैं उन को आमतौर पर सिर्फ इबादत (उपासना) की हद तक सीमित रखा गया है, लेकिन इस्लाम में इस तरह नहीं है। इस में मानव–जीवन की तमाम आस्थाओं और व्यवहारिक पहलुओं को मज़हब की रहनुमाई में रखा गया है और यह मार्ग–दर्शन ऐसा रखा गया है और इस प्रकार मज़हब को पूरे जीवन के लिये गाइड बनाया गया है और यह मार्ग–देर्शन ऐसा रखा गया है जो मानव–स्वभाव से मेल खाता है और उस की सहूलत के लेहाज़ से इस में कोई दुशवारी नहीं रखी गयी है, बल्कि इन्सानों की जरूरतों और दूर अन्देशियों का इस में लेहाज रखा गया है।

इस प्रकार मुसलमानों को अपने जीवन के हर पहलू में यह देखना होता है कि उस के पैदा करने वाले और उस के जीवन को तमाम राहत का सामान प्रदान करने वाले उस के पालन हार की पसन्द क्या है, फिर उस की पाबन्दी करना होती है और उस के रब की पसन्द उस के रसूल सल्ल0 पर उतरी हुई 'वही' के जरियः और व्यवहारिक जीवन में उन की अपनाई गयी तमाम बातों को अनुकरणीय मिसाल करार देकर पूरी तरह स्पष्ट कर दिया गया। मुसलमानों को इस की पाबन्दी करना होता है। ऐसा समाज इस्लामी इतिहास में जब और जहाँ काइम हुआ उस में मानव–जीवन की ऐसी खूबियाँ दिखीं और उजागर हुई जो मनुष्य की अन्य प्राणियों पर बरतरी की उत्कृष्ठ मिसाल बनें।

मानव–जीवन की वह विशेषतायें जो जग के पालनहार की तरफ से बताई गई हैं उन में एक दूसरे की खैरख्वाही कमजोरों की मदद, आपसी प्रेम व भाईचारा, अत्याचार और स्वार्थ से परहेज, माल व दौलत और साँसारिक लाभ को सिर्फ जरूरत की हद तक रखने पर सन्तोष और अपने पालनहार की खुशनूदी को दूसरे उद्देश्यों पर प्राथमिकता देना, वह उच्च गुण हैं जो मानव समाज को इस धर्ती की जन्नत व स्वर्ग बना देते हैं। मुसलमानों को ऐसे ही समाज की संरचना करने को कहा गया है।

इस्लामी समाज या मुसलमानों का समाज यही समाज है जिस की जग के पालनहार की तरफ से भेजी गयी 'वही' के जरिये शिक्षा दी गई है और इस की पाबन्दी पर जग के पालहार की तरफ से खुशनूदी हासिल होती है और बरकत व रहमत उतरती है। और इस के बिना आखिरत (पारलौकिक जीवन) में कामयाबी नहीं मिलती, बल्कि दुनिया में भी खैर व खूबी हासिल नहीं होती, और खिलाफ करने की सूरत में मुसीबत का सामना होगा और दुनिया में भी सामान्यतः परेशानियाँ उठानी पड़ सकती हैं। कुरआन में भी इस को स्पष्ट कहा गया है कि

मुसलमान जैसी जिन्दगी गुजारेंगे उसी के अनुसार उन को इस के परिणाम देखने होंगे अर्थात नाफरमानी की सूरत में उन को तकलीफें या मुसीबतें पेश आ सकती हैं, उनके वाहय कारण संसारिक मालूम होंगे, लेकिन उन का असल कारण उन के कर्मों की खराबी होगी। अल्लाह का इरशाद है कि "और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है सो तुम्हारे अपने कर्मों से है और वह बहुत से गुनाह तो माफ ही कर देता है।" (सूरः शूरा – 30) और अल्लाह ने कुरआन में यह भी फरमा दिया कि उसने इस में मुसलमानों और दूसरी कौमों को जो अपने को आसमानी मजहब की ताबेदार समझती थीं और अहले किताब कही जाती है इस बारे में एकसमान रखा है कि इन में से जो भी जैसा करेगा वैसा ही नतीजा देखेगा।

हमारी इन्सानी जिन्दगी में उपासना का पहलू तो धार्मिक महत्व और विशिष्टता का समझा ही जाता है, लेकिन जीवन के सामान्य व्यवहार, आचरण और अन्य आचार–व्यवहार के सिलसिले में सामान्यतः इस बात की अनदेखी कर दी जाती है कि इन के सिलसिले में भी धार्मिक निर्देश हैं और इन की ताबेदारी ठीक ढंग पर करने पर इन आचार–व्यवहार को भी इबादत का दर्जा हासिल हो जाता है। और धार्मिक निर्देशों की सही पाबन्दी न हो तो इबादत के पहलू भी इबादत के फायदे से खाली हो जाते हैं। इस लिये बहुत जरूरी है कि जीवन के सारे आयामों में जग के पालनहार की तरफ से दी गयी हिदायत की पाबन्दी की जाये। इसी लिये मुसलमानों के धार्मिक मार्गदर्शक बराबर जीवन के तमाम आयामों में खुदाई हुक्म के ताबेदारी की और ध्यान दिलाते रहते हैं और इस का फायदा भी यह होता है कि मुसलमानों में एक तादाद बराबर प्रत्येक युग में इस्लाम की इस सारगर्भित तथा बहुआयामी विशेषता को अपनाती रही है।

यह और इस प्रकार की अन्य बातें मैं ने समय–समय पर पाठकों के लिये कहीं, इन में से विशेष कर वह लेख जो नदवा से प्रकाशित होने वाले पाक्षिक "तामीरे हयात" के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हुए और वह तामीरे हयात की फाइलों में बिखरी थीं, उन को प्रिय मोल्वी महमूद हसन हसनी नदवी और प्रिय मोल्वी मुहम्मद वसीक नदवी ने वहाँ से निकाला और शीर्षक के अनुसार संकलित कर एकत्र कर दिया और इस संकलन को प्रकाशन के योग्य बना दिया। आशा है कि यह काम फायदा से खाली न होगा। मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह इन जमा करने वालों को और अब इसे हिन्दी में प्रस्तुत करने वाले मुहम्मद हसन अंसारी को और "सच्चा राही" के जिम्मेदारों को इस कार्य का बेहतर बदला देवे, और लेखक को भी बदला से वंचित न करे।

❑❑

## बात दूसरी दुन्या की

उन से सन्तान की प्रार्थना कर ली तो किसी को तकलीफ़ तो नहीं पहुँचाई यह जहन्नम की सज़ा क्यों? जिस का अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान है वह जानता है कि वहाँ इस तरह़ का उ़ज़्र न कोई करेगा न ऐसा उ़ज़्र चलेगा। उस के सामने तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह तअ़्लीम है कि ईमान की मिठास उसी को मिलेगी जिस में यह तीन बातें हों :–

- अल्लाह और उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उनके मा सिवा (उन के अतिरिक्त जो है) से महबूब हों।
- किसी से महब्बत करे तो अल्लाह के लिये करे।
- कुफ़्र (व शिर्क) की तरफ़ दोबारा लौटना उतना ही नापसन्द करे जितना आग में डाले जाने को ना पसन्द करता है।

रहे वह लोग जिन का ईमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बताई हुई उख़रवी ज़िन्दगी पर डाँवा डोल है वह तो आँख बन्द होने के बअ़्द ही ह़क़ीक़त को जान सकें गे।

❑❑

# कुर्आन की अअ्ला और मरकज़ी तअ्लीम तौहीद है

– मौ० अब्दुल माजिद दरयाबादी

कुर्आन की अअ्ला और मरकज़ी तअ्लीम तौहीद है। सैकड़ो क्या हजारों आयतों में इसी एक मज़्मून को हर–हर ढंग से दुहराया है कि खुदा एक है। उस का कोई शरीक नहीं, न जात में न सिफात में, सब उस की मखलूक, सब उस के बन्दे, कोई न उस का मज़हर ना उस का बेटा। कदीम सिर्फ़ उस की जात बाकी सब हादिस व फ़ानी। रूह, फ़िरिश्ता, पैग़म्बर सब उस के मुहताज, वह ख़ुद सब से बे नियाज़, सब उसी के इशारे पर नेस्त से हस्त हुए। वही सब को बग़ैर रूह, माददः या किसी सहारे के अदमे महज से वजूद में लाया। वही सब का खालिक, वही सब का राजिक, वही जिलाता है, वही पालता है, वही मारता है, वही कुदरत वाला, इल्म वाला, हिकमत वाला, निहायत दर्जे शफीक व हलीम, करीम व रहीम, बन्दों को नेक व़ बद पूरी तरह समझा कर, दोनों राहें उन के सामने खुली छोड़ दी है। अब जो चाहे फहम, व कुव्वते इरादा के सहीह इस्तिअमाल से राहे रास्त इख्तियार करे, जिस का नतीजा राहत ही राहत है और जो बदबख्त चाहे अपनी बद फहमी और कज रवी से टेढ़े रास्ते पर पड़े जिस का अंजाम मुसीबत ही मुसीबत है। खुदा जालिमों को उन के अमल की सजा भुगताएगा और यही उस् का गजब व इन्तिकाम है। लेकिन कोई मजबूरी व पाबन्दी उस पर इस बाब में नहीं जिस को चाहे मुआफ़ भी कर सकता है।

❑❑

## कुरआन की शिक्षा

हालाँकि (उस की वह शान है कि) सारी जमीन (पूर्व से पश्चिम तक) कियामत के दिन उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आसमान लिपटे–लिपटाये उस के खास दस्ते–कुदरत में होंगे। वह पाक है और बरतर है उन के शिर्क से। और जब कियामत का सूर फूंका जायेगा तो जमीन व आसमान की सारी मखलूक के होश उड़ जायेंगे (हाँ) मगर जिस को अल्लाह तआला चाहेगा (होश में रखना, तो वह होश की हालत में रहेगा) फिर (जब) दूसरी बार (मुर्दों के जिन्दा करने के लिये) सूर फूंका जायेग तो फौरन सब के सब (जिन्दा हो के) उठ खड़े होंगे (और आँख फाड़–फाड़ के हैरत से हर तरफ) देखते होंगे। और जमीन अपने रब के नूर से जगमगा जायेगी और (सब का) नाम–ए–आमाल (सामने) रख दिया जायेगा और पैगम्बर और गवाह (दरबारे–इलाही में) हाजिर किये जायेंगे और सब के दरमियान ठीक–ठीक फैसला किया जायेगा, और उन पर जुल्म बिल्कुल न होगा। और जिसने जो कुछ किया होगा उस को उसका भरपूर बदला दिया जायेगा। और वह अहकमुल् हाकिमीन, बन्दों के सारे आमाल को खूब जानता है।

(जुमर : 53–70)

❑❑

किस्त : 13

# जगानायक

**मौलाना मुहम्मद राबे हसनी**

**अनुवाद मु० गुफरान नदवी**

**अब्दुल्लाह :** हुजूर सल्लललाहु अलैहि व सल्लम के वालिदे मुहतरम (आदरणीय पिता) अब्दुल्लाह ने बहुत कम उम्र पाई, लेकिन उनको शराफत और इज्जत का मुकाम हासिल होने के साथ यह खुसूसियत (विशेषता) भी हासिल हुई कि उनके बाप अब्दुल मुत्तलिब ने यह दुआ की थी कि अगर उनके दस बेटे हुवे तो शुक्र गुजारी के तौर पर उन में से एक को जबह करेंगे, चुनाचि दस की गिनती पूरी होने पर उन में से एक का इन्तिखाब करना था उनको इस सिलसिलें में हज़रत अब्दुल्लाह को जबह करने का इशारा मिला चुनाँचि वह उनको जबह करने के लिये तय्यार हुवे, लेकिन उनको मशवरह दिया गया कि उनको जबह करने के बजाए जबह करने का बदल "दियत"[1] देकर उनको सुरक्षित रखें, दियत को तै करने के लिये "फाल" ली तो बड़ी ऊँची और मंहगी "दियत" बहुत ऊँटों को जबह करने की आई, और उन्होंने इसको अनजाम दिया अर्थात पूरा किया[2] और इस प्रकार उनको जबह करने से जो कुरबानी उनकी ओर से हुई वह इस प्रकार पूरी हुई और अब्दुल्लाह की इस शकल में गोया कुरबीनी हुई, और उनको हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नकल हासिल हुई कि हज़रत इस्माईल को उनके वालिद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के लिये अपने इरादे के मुताबिक जबह कर दिया था, और अल्लाह ने वक्त पर एक मेंढा भेज कर छुरी को उस पर चलवा दिया, इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे की कुरबानी की पेशकश की, लेकिन अल्लाह तआला ने उसको बदल दिया और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचा दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह का नसब (वंश) उनके तमाम समवर्ती कुरैशियों के मुकाबले में जियादा प्रमुख विशेषताओं और उच्च चरित्र वाले व्यक्तियों पर आधारित था, कुछ तो इस प्रकार कि उनके नसब (वंश) की ऊपर से आने वाली कड़या अन्य खानदानी कड़यों में उच्चकोटि की थीं, अरबों में नसब की बलन्दी ऊपर के लोगों के आचरण और उनके चरित्र की बलन्दी के लिहाज से देखी जाती थी कि कितने लोग कितने उत्तम आचरण और उत्तमचरित्र वाले गुजरे हैं, हज़रत अब्दुल्लाह की बलन्दी उच्च्ता स्वयं अपनी जाती विशेषताओं के लिहाज से भी अपने बराबर वालों में श्रेष्ट थे, उनकी शादी भी बनूजुहरा में हज़रत आमिना बिन्त वहब से हुई थी[1] जो अपने हसब व नसब (गोत्रवंश) में बहुत साफ और उच्च आचरण की कुरैशी शाख से थीं, "वहब" कबीले बनी जुहरा के सरदार थे, उनके नसब का सिलसिला "फहर" जिनकी शुहरत कुरैश से है, जा मिलता है, इस तरह दादहियाल और नानहियाल दोनों तरफ से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल का नसबी दर्जा बहुत ही बलन्द रहा, और नसब (वंश) व आचरण दोनों लिहाज से आप उच्च स्थान पर होने की तसदीक (पुष्टि) अल्लाह तआला की तरफ से भी की गई, एक तो यह कि दूसरों के मुकाबिले में अल्लाह तआला ने "नबूवत" और "रिसालत" के लिये मुनतखब फरमाया और कुरआन मजीद में फरमाया कि "तुम ऊँची सीरत (चरित्र) व किरदार (आचरण) के हो" और फरमाया कि "अल्लाह तआला खूब जानता हे कि अपनी रिसालत का शरफ (प्रतिष्ठा) कहाँ रखे।

## विलादत (जन्म)

फिर अल्लाह तआला को यह मनजूर हुआ कि आप अपने बाप का साया न पाएं और अल्लाह तआला की तरफ से खुसूसी (विशेष) देख भाल हो, अतः अल्लाह तआला ने यह निश्चित किया कि आप के

1– वह धन जो किसी के हत्या करके उसके घर वालों को दिलाया जाए।

2– सीरत इब्नेहिशाम : 1/155।

1– सीरत इब्न हिशाम : 1/157।

आदर्णीय पिता हज़रत अब्दुल्लाह, आप के पैदा होने से कुछ महीने पहले जब आप माता के गर्भ में थे, मदीना की यात्रा करते समय देहान्त कर गए, और वहीं आपको दफन कर दिया गया, इस प्रकार उनकी मृत्यु के पश्चात हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक जन्म हुवा नौ रबीउलअव्वल सोमवार का दिन था (17 अप्रैल 570 ई0)[1]

अतएवं आपकी पैदाइश होने पर आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को अपने इस पोते की ओर विशष ध्यान और ममता की जिम्मेदारी मिली, उन्होंने "मुहम्मद" (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नाम रखा[2] और ऐसी ममता और चिन्ता की कि पिता के न होने की यथासंभव पूर्ति की।

## रजाअत (दूध पीने का जमाना)

मक्का मुकर्रमा में पैदा होने वाले बच्चों की पैदाइश के मौके पर बच्चों की रजाअत और प्रांरभिक पालन पोषण के लिये शहरों से अधिक दीहातों को पसन्द किया जाता था, इस लिये कि वहाँ की जलवायु अधिक साफ सुथरी और सादा, वहाँ के रहने वालों के आचरण और स्वाभाव में सन्तुलन और शान्ति अधिक थी।, शहरी जिन्दगी के शहरी और कारोबारी आचार व्यवहार से जो खराबियाँ पैदा होती हैं बचपने की सादा दिली और मअसूमियत उन खराबियों से महफूज (सुरक्षित) रहती है। इसके अलावा दीहात और उसके आस पास की जबान (भाषा) शहरी जबान के मुकाबले में अधिक उचित और उत्तम मानी जाती थी।

हवाजिन कबीले की आबादी (ज़नसंख्या) जो मक्का और ताएफ़ के बीच स्थित क्षेत्र में मक्का के उत्तरी दिशा में थोड़ी दूरी पर थी वहीं उसकी शाखा बनी सअ़द का घराना था, उसकी महिलाएं साल में एक मर्तबा मक्का आकर वहाँ के नवजाति बच्चों को उनके रजाअ़त के ज़माने (दूध पीने की अवस्था) में लेजाया करती थीं, और दो तीन साल तक अपने बच्चों के साथ रखती थीं, उनको उसकी मजदूरी और मुआवजह बच्चों के माँ बाप की ओर से मिलता था और यह उनकी अजीविका का साधन बन जाता था, अतः हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के साल भी यह औरतें आईं, और जिन बच्चों के माँ बाप हैसियत वाले दिखे उनके बच्चों को वह ले गईं, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लेने में उन सबको संकोच हुवा कि आप यतीम थे, बाप न थे कि दूध पिलाने पर बहुत अच्छी मजदूरी मिलने की उम्मीद होती, बच्चों को लेने के लिये आने वाली महिलाओं में हलीमा बिन्त अबी जुवैब अस्सादिया को सवारी की कुछ दुशवारी की वजह से लोगों के घरों में पहुँचने में देरी हुई और खाते पीते घरानों के नवजाति बच्चों को दूसरी औरतों ने हासिल कर लिया और हलीमा को आप के अलावा दूसरा कोई बच्चा न मिल सका और उनको मजबूर होकर आप ही को लेना पड़ा उन्होंने आप को लिया तो मुआवजा की अच्छी उम्मीद न होने की बिना पर मायूसी की सी कैफियत महसूस हो रही थी, लेकिन आपको ले जाने पर उन्हों ने खुसूसी (विशेष) मआमला देखा, कि हर बात में बरकत महसूस हुई, ऐसी बरकत कि दूसरी दूध पिलाने वालियों को ईर्ष्या हुई कि हज़रत हलीमा को हरचीज में फाइदा महसूस हुवा, चुनाँचि हज़रत हलीमा ने रजाअत (दूध पिलाने) के लिये बाहर रहने की जो मुद्दत (अवधि) होती है उससे अधिक मुद्दत की लिये आपको अपने पास रखा, हज़रत हलीमा इस घटना को इस तरह बयान करती हैं कि :–

"वह अपने गाँव से अपने पति और अपने एक दूधपीते छोटे बच्चे को लेकर क़बीला बनूसअद बिन बक्र की औरतों के साथ दूध पीने वाले बच्चों की तलाश में निकलीं, वह कहती हैं कि यह वाकिआ उस साल का था जिस में सूखा पड़ गया था और गरीबी थी, जिसकी वजह से हमारे पास कुछ नहीं रह गया था, कहती हैं कि मैं अपनी एक गदही की सवारी पर निकली जो खाकी रंग की थी, हमारे साथ एक बूढी ऊँटनी भी थी जो बड़ी मुशकिल से थोड़ा दूध भी नहीं दे पाती थी, चुनाँचि हम सारी रात अपने उस बच्चे के साथ जो हमारे साथ था, सो नहीं पाते थे जो भूक से रोया करता था, खुद मेरी छातियों

1– अस्सीरतुन नबवीयः फी फतहिल बारी, इबन हजर अस्कलानी : 1/212।

2– अलविदाय वन निहाया 3/266।

में इतना दूध न था जो उसकी जरूरत को पूरा करे, और न हमारी बूढ़ी ऊँटनी में दूध था जिससे उसको गिजा मिले, लेकिन हम उम्मीद करते थे कि मदद मिलेगी और तंगी दूर होगी, चुनाँचि मैं अपनी उस गदही की सवारी पर निकली और मैंने काफिले वालों को भी रास्ते में सवारी की सुस्त रफ्तारी की वजह से जगह जगह इन्तिजार कराया यहाँ तक कि काफिले वालों को हमारी सवारी की कमजोरी और दुबले पन से परेशानी हुई, चुनाँचि हम मक्का पहुँचे और दूध पीने वाले बच्चों को तलाश करने लगे, हम में से हर औरत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ जाने का मौका मिला और उनके सामने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेश किया गया लेकिन वह कुबूल नहीं करती थीं जब यह बताया जाता था कि वह यतीम है, और बात यह थी कि हम कुछ फाइदा हासिल करने की उम्मीद में होते थे कि जो हमको बच्चे के बाप से मिलता, चुनाँचि हम आपको देख कर कहते कि यह तो यतीम हैं, उनकी माँ और उनके दादा से कहाँ तक उम्मीद की जा सकती है, हम आपको इसी वजह से पसन्द नहीं करते थे, होते–होते कोई औरत ऐसी नहीं बची जो मेरे साथ आई मगर कोई बच्चा उसने हासिल न कर लिया सिवाए मेरे, फिर जब हम सबने वापस होने का फैसला किया तो मैंने अपने शौहर से कहा बखुदा मुझे अच्छा नहीं लगता कि मैं लौटूं और मेरे साथ की सब औरतें लौटें और सिर्फ मैं कोई बच्चा न हासिल कर सकी हूँ, मैं जरूर जाऊँगी और उस यतीम बच्चे ही को लेकर आती हूँ, उन्होंने कहा कोई हरज नहीं, कि तुम ऐसा करलो, हो सकता है कि अल्लाह तआला हमारे लिये इसी में बरकत रख दे, कहने लगीं मैं वहाँ गई और मैंने उनको ले लिया मुझे उनके लेने पर सिर्फ इस बात ने आमादा (तत्पर) किया कि मुझे उनके अलावा और कोई बच्चा मिल न सका था।

❑❑

**मुसलमानों का दीनी मौकफ....**

और वह हिन्दुस्तान की मुत्तहिदा (संयुक्त) कौमियत में जज़्ब (विलीन) हो कर जर्मन या अंग्रेज़ की तरह हिन्दुस्तानी क़ौम के सिवा कुछ न रहें।

मुसलमान को साफ तौर पर चिल्ला कर और पुकार कर यह एलान कर देना चाहिये कि वह हिन्दुत्व में जज्ब होने के लिए एक छण के लिए भी तैयार नहीं है। आजादी की जंग में अपने देश वासियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के यह मानी हरगिज नहीं कि मुसलमान अपनी विशेष मिल्ली विशेषता को छोड़ दें और हिन्दुस्तान की संयुक्त कौमियत के समुद्र में अपनी मिल्ली पहचान खोकर के रख दें। ऐसा हरगिज़ न होना चाहिये और न इंशाअल्लाह होगा।

❑❑

**प्यारे नबी की प्यारी बातें**

नागाह रसूलुल्लाह (स0) हमारे पास से उठकर तशरीफ ले गये और देर लगायी। हम लोग डरे कि नसीबें दुश्मनाँ कोई हादिसः न पेश आया हो और सबसे पहले मैं डरा और हाँ हज़रत (स0) की फिक्र में निकला, तलाश करते–करते बनी नज्जार (अन्सार) के बाग में आया और दरवाजा ढूंढ़ता रहा लेकिन पता न चला। इतने में एक नाला देखा जो बाग के बीच में दाखिल होता था और बाहर कुएं से निकल जाता था और छोटा–सा था। मैं सिमट गया और उसी नाले से होता हुआ हुजूर (स0) के पास पहुँचा। आपने फरमाया, अबू हुरैरः (र0) ! मैंने कहा जी या रसूलुल्लाह! फरमाया, क्या बात है, कैसे आये? मैंने कहा, आप हमारे पास से उठकर तशरीफ ले गये और देर लगायी। हम लोग डरे कि कहीं कोई बात न पेश आयी हो। इसलिए हम लोग घबरा गये और अव्वल मैं घबराया, फिर मैं आपको तलाश करते हुए यहाँ पहुँचा और ऐसा सिमटा जैसे लोमड़ी सिमटती है। और लोग मेरे पीछे आ रहे हैं। आपने फरमाया, ऐ अबू हुरैरः (र0) ! यह मेरे दोनों जूते लो और उन दोनों जूतों के साथ जाओ; जो तुमको उस बाग के पीछे मिले और अपने दिल के यकीन के साथ गवाही दे कि सिवा खुदा के कोई माबूद नहीं, उसको जन्नत की बशारत दो। (उसके बाद पूरा वाकिआ सुनाया)। (मुस्लिम)

❑❑

# मुसलमानों का दीनी मौक़फ़ बिलकुल वाज़े है

## (मुसलमानों के दीन की बुनियाद बिलकुल स्पष्ठ है)

**मुसलमानों को एलान कर देना चाहिये कि वह हिन्दुत्व में ज़म होने के लिए एक छण के वास्ते भी तैयार नही**

**मौलाना अबुल कलाम अज़ाद**

**– हबीबुल्लाह आज़मी**

**मौलाना अपनी फ़िक्र अंगेज और वलवला खेज़ तकरीर (चेतनापूर्ण और उत्साह वर्धक भाषण) में फरमाते हैं :–**

मैं मुसलमान हूँ और गर्व के साथ महसूस करता हूँ कि मैं मुसलमान हूँ। इस्लाम के तेरह सौ साल की शान्दार रिवायतें (परम्पराएं) मेरे विर्से (उत्तराधिकार) में आई हैं मैं तैयार नहीं हूँ कि उसका कोई छोटे से छोटा हिस्सा भी जाया (नष्ट) होने दूं। इस्लामी तारीख (इतिहास) इस्लाम के ज्ञान व कला कौशल, इस्लाम की सभ्यता मेरी दौलत का सर्माया (पूंजी) है और मेरा फर्ज़ (कर्तव्य) है कि इसकी हिफाजत (रक्षा) करूं। मुसलमान होने के नाते मैं मजहबी और कलचरल दायरे में अपनी खास हस्ती रखता हूँ और मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता कि इसमें कोई मदाखलत (हस्तक्षेप) करे लेकिन इन एहसासात (चेतनाओं) के साथ मैं एक और एहसास रखता हूँ जिसे मेरी जिन्दगी की राहों ने पैदा किया, इस्लाम की रूह मुझे इस से नहीं रोकती बल्कि वह इस राह में रहनुमाई (मार्गदर्शन) करती है। मैं फख्र (गर्व) के साथ महसूस करता हूँ कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ। मैं हिन्दुस्तान की एक नाकाबिले तकसीम कौमियत (अविभाजित संयुक्त राष्ट्रीयता) का एक अंग हूँ जिस के बगैर इस की महानता का रूप अधूरा रह जाता है। मैं इस की बनावट का एक जरूरी फैक्टर (Factor) हूँ मैं इस दावे को कभी नहीं छोड़ सकता।

हम अपने साथ कुछ जखीरे (दौलत) लाए थे और यह जमीन भी अपने जखीरों से मालामाल थी। हमने अपनी दौलत इस के हवाले कर दी और उसने अपने खजाने के दरवाजे हम पर खोल दिये। हमने इस इस्लाम के जखीरे की वह सब से ज्यादा कीमती चीज दे दी जिस की उसको सबसे जियादा जरूरत थी। हमने इसे जमहूरियत और इंसानी मसावात (लोकतंत्र और इंसानी बराबरी) का पैगाम पहुँचा दिया।

तारीख की पूर्ण ग्यारह सदियाँ इस घटना पर गुजर चुकी हैं इस्लाम भी इस सरजमीन पर वैसा ही दावा रखता है जैसा दावा हिन्दू मजहब का है। अगर हिन्दू मजबह कई हजार वर्ष से इस के बासियों का मजहब रहा है तो इस्लाम भी एक हजार वर्ष से इस के बाशिन्दों का मजहब चला आ रहा है जिस तरह एक हिन्दू गर्व के साथ कह सकता है कि वह हिन्दुस्तानी है और हिन्दू मजहब का पैरव (मानने वाला) है ठीक उसी तरह हम भी फख्र (गर्व) से कह सकते हैं कि हम हिन्दुस्तानी हैं और मजहबे इस्लाम के पैरव हैं।

1936 में यू0पी0 में जब पहली बार सूबाई हुकूमत का गठन हुआ था तो उस समय शिक्षा मंत्री समपुर्ना नन्द जी ने एसेम्बली में तालीम और कलचर के विषय पर हुकूमत की पालिसी स्पष्ट की थी। उस की प्रतिकृया (रदेअमल) के तौर पर मौलाना आजाद का तबसेरा (समीक्षा) यह था "अगर समपुर्ना नन्द जी ने यू0पी0 एसेम्बली में हिन्दू–मुस्लिम की पहचान देखना नहीं चाहते और न कलचर और तहजीब के मामले में हिन्दू–मुस्लिम की पहचान करते हैं तो अवश्य उन्होंने एक एसा नजरिया (दृष्टकोण) पेश किया है जो मुसलमानों के लिए काबिलेकुबूल (स्वीकार योग्य) नहीं हो सकता और नमुसलमान इस मकसद से ताक्यामत मुत्तफिक (सहमत) हो सकते हैं कि हिन्दुस्तान से मुस्लिम तालीम मुस्लिम कलचर और मुस्लिम तहजीब की पहचान खत्म हो जाये

**शेष पृष्ठ 12**

# साम्प्रदायिक मानसिकता को बढ़ावा देता
# भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्थान

**उमामा साबिरी**

'भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्थान' की स्थापना ही इस पूर्वाग्रह के साथ हुई है कि देश के मुसलमानों की पुरानी इमारतें, मस्जिदें और मकबरे मुस्लिम शासनकाल के नहीं हैं, बल्कि प्राचीन हिन्दू शासकों द्वारा बनावाये गये भव्य मन्दिर एवं धर्मशालाएं हैं। इसके जरिये यह दुष्प्रचार किया जाता है कि इन मन्दिरों एवं धर्म स्थलों को थोड़ा बहुत रंग–रौगन करके उन्हें मस्जिदों, मकबरों एवं इमामबाड़ों का रूप दे दिया गया है।

मध्यकालीन इतिहासकारों की इस धारणा से पुनर्लेखन संस्थान बिल्कुल भी सहमत नहीं है कि भारत में मुस्लिम शासकों का युग इतिहास में सुनहरे युग के नाम से जाना जाता है। हर ओर सुख एवं शान्ति थी। लोग हर तरह से सम्पन्न थे। इस युग में अनेक भव्य इमारतों की तामीर हुई। अंग्रज जब भारत आये तो उस समय भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। पुनर्लेखन संस्थान वाले इसे इस्लामी प्रचार, जिसे वे दुष्प्रचार का नाम देते हैं, का हिस्सा मानते हैं। उनके इस प्रचार से लोग भ्रमित हो चुके हैं और इतिहासकार भी इस भ्रमजाल से अलग नहीं हो पा रहे हैं। स्वयं पुरुषोत्तम नागेश 'ओक' के शब्द में : "इस्लामी प्रचार ने जिस प्रकार जनमानस को पूरी तरह से भ्रमित कर दिया है और किसी भी युक्ति–युक्त विचार–पद्धति को हृदयंगम करने से स्थायी रूप से अक्षम, असमर्थ कर दिया है वह अत्यंत विद्ग्धकारी, हतप्रभ करने वाला है।

(लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू राजभवन है, पृष्ठ 8)

ओक साहब किस कद्र पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं कि जब लखनऊ के बड़े–बूढ़ों ने उनसे कहा कि लखनऊ में न केवल सभी बड़े भवन 'अथवा पुल नवाबों द्वारा बनवाये गये थे और नवाबों से पहले लखनऊ नगर अस्तित्वहीन था तो वे बिफर पड़े और झिल्ला कर बोले, "मानो स्वयं अल्लाह द्वारा ही यह नगर विशेष रूप से उपहारस्वरूप प्रदान कर दिया गया था।"

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 8)

पुरुषोत्तम नागेश ओक को शिक्षाशास्त्रियों की यह बात भी अच्छी नहीं लगती जब पुनर्लेखन संस्थान की जाँच–पड़ताल को ही व्यथ, अनावश्यक, पक्षपाती और मुस्लिम विरोधी मान लिया जाता है। उनका मानना है कि अरबों, तुर्कों, ईरानियों, अफ़गानियों, अबीसीनियनों, कजकों और उज्बेकों के लूट–खसोट से स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है और उसे सामने लाना जरूरी है। भारत सम्पूर्ण विश्व में प्रज्ञा, ज्ञान, महान, कौशल, आध्यात्मिक उपलब्धियों, दूध, मधु और स्वर्ण के महान देश के रूप में सुविख्यात था तो यह स्थिति स्पष्टतया मुस्लिम पूर्वकाल में रही होगी। जब भारत मुस्लिम आक्रमणों का शिकार हो गया तो भारत का समम्पूर्ण धन–वैभव, मान–सम्मान सब विनष्ट हो गया।

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 10)

अपनी किताब में आगे लिखते हैं : "इस्लाम ने इतिहास के समस्त अभिलेखों को न केवल समूल नष्ट करने का यत्न किया है, अपितु मुस्लिम–पुर्व इतिहास के संबंध में समस्त विवेचन और अध्ययन को अनुत्साहित और मूक–मौन कर देने का घोर प्रयत्न भी किया है। लखनऊ नगर और वहाँ बने हुए भवनों का इतिहास भी एक ऐसा ही असहाय का शिकार है। लखनऊ मध्यकालीन मुस्लिम प्रचार के चक्रव्यूह में फंसकर अपनी आत्मा और प्राचीन व्यक्तित्व को विस्मरण कर चुका है, उन्हें गाँवा चुका है।

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 10)

इस तरह के पर्वाग्रह के साथ जब इतिहास लेखन का काम शुरू होगा तो उसके प्रमाण के सिलसिले में सहज ही समझा जा सकता है। प्रमाण खोजते समय इस बात का भी ख्याल नहीं किया है कि उसके बारे में क्षेत्रीय आबादी के लोग विशेषकर बड़े–बूढ़े क्या कहते हैं। केवल शब्दों के भ्रमजाल में फंसा

कर सच्चाई को छुपाने की नाकाम कोशिश की गयी है। विश्वसनीय इतिहासकारों द्वारा पेश किये गये तथ्यों को नकारते हुए जो बात लिखी गयी है उसकी बानगी देखिये :–

सबसे पहले उन्हें 'इमामबाड़ा' शब्द पर ही आपत्ति है। वे इस बात को नहीं मानते कि शिया मुसलमान "इमामबाड़ा" उस जगह को कहते हैं जहाँ इमाम हुसैन (रज़ि0) की शहादत को याद किया जाता है। लोग 10 मुहर्रम को जमा होते हैं और मातम मनाते हैं और ताज़िया आदि का आयोजन होता है। अब देखिये ओक साहब क्या लिखते हैं :

"इमामबाड़ा किसी मस्जिद के अथवा शासन के प्रधान धार्मिक नेता का निवास स्थान होना चाहिए। (क्योंकि इमाम मुस्लिम समुदाय के प्रधान को कहा जाता है। उसका कर्तव्य है कि वह आस्था की रक्षा करे और राज्य की सरकार को बनाये रखे और शुक्रवार की नमाज का नेतृत्व करे।)

लखनऊ के दोनों भवन–बड़ा इमामबाड़ा और छोटा हुसैनाबादी इमामबाड़ा–यद्यपि इमामबाड़ा के नाम से पुकारे जाते रहे हैं, तथापि किसी इमाम के लिए निवास स्थान के रूप में बनाये गये नहीं कहे गये हैं और न ही यह दावा किया गया है कि उनको किसी भी श्रेणी में धार्मिक नेता द्वारा वास्तव में अपने उपयोग निवास स्थान के रूप में लाया गया है।"

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 10)

अब देखिये भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्थान के शोधकर्ता लखनऊ के बारे में क्या कहते हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि वे इसे नहीं मानते कि लखनऊ नवाबों का शहर था। वे कहते हैं :

"अयोध्या के (राजा) रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण द्वारा स्थापित और संस्थापक के नाम पर ही लक्ष्मणवती नाम से पुकारे जाने वाले नगर के स्थान पर ही (वर्तमान) लखनऊ स्थित कहा जाता है।

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 22)

(इमामबाड़े) के सभी ऊँचे–ऊँचे दरवाजों पर मछली की बड़ी–बड़ी आकृतियाँ बनी हुई हैं... वे भवन तो लखनऊ के प्राचीन हिन्दू शासकों के किलेनुमा राजमहल हैं जिनमें उनका राज चिन्ह मत्स्य विद्यमान है। ...मुसलमानों के लिए मछली कभी भी राज चिन्ह नहीं हो सकता है...।

...इसके विपरीत मछली अति प्राचीन रामायणकालीन राज चिन्ह है क्योंकि लंका पर आक्रमण करने के लिए जाती हुई राम की सेना ने विशाल समुद्र को पार किया था।"

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 22)

पुनर्लेखन संस्थान के एक और शोध (?) पर नज़र डालिये :

"भवनों की दीवारों और भीतरी छतों को काँच के छोटे–छोटे टुकड़ों से सजाना एक हिन्दू–राजपूती रीति–नीति है। मुस्लिम लोग ऐसे काँचभवन कभी नहीं बनाएंगे जिनमें उनके महिला वर्ग के हजारों प्रतिबिम्ब दिखायी पड़ें।"

(लखनऊ के इमामबाड़े, पृष्ठ 55)

अच्छा होता यदि ये शोधकर्ता इन आकलनों के बदले कुछ ऐतिहासिक तथ्य पेश करते। लेकिन कहीं भी ऐसा नहीं है। लगता है उनका शोध सच्चाई जानने के लिए कम और साम्प्रदायिक द्वेष फैलाने के लिए ज्यादा है। प्रफुल्ल गोराड़िया, पुरुषोत्तम नागेश ओक आदि को इसीलिए तो नियुक्त किया गया है कि साथ रह रही भारत की भोली–भाली जनता के बीच साम्प्रदायिकता का जहर घोलें और आकलनों को शोध के नाम पर पेश करें। आम लोगों को इससे बचना चाहिए।

सप्ताहिक कान्ति 25 अक्टूबर

❑❑

## सैलानी की डायरी

नदी तट पर आबाद गाँव के लोग बाढ़ के समय बचाव के लिये और सामान्य स्थिति में नदी पार जाने के लिये डोंगी (छोटी नाव) रखते हैं। यहाँ भी बहुत से घरों के पास रखी हुई डोगी देखी।

जौरास में, जैसा कि लखनऊ की आस पास की बस्तियों में मुस्लिम बच्चों को जरदोजी के काम पर लगाया जाता है, लड़कों को काम करते देखा। इस से माली हालत तो सुधरती है किन्तु लड़के तालीम में पीछे रह जाते हैं। सुबह शाम कोचिंग सेंटर चलाकर इस महरूमी को दूर किया जा सकता है। इस पर ध्यान देने की जरूरत है। सरकार भी मदद करती है अल्पसंख्यकों की शिक्षा के लिये निर्धारित बजट से।

❑❑

# खारा पानी से काला पानी

मु० इलयास नदवी भटकली

बचपन में तालीम के दौरान जब अंग्रेजों की हिन्दोस्तानियों पर जुल्म व सितम की दाँस्तान बयान की जाती तो उस में बार–बार काला पानी का जुम्ला सुनने को मिलता। जाहिर बात है कि काला पानी में जिला वतनी की सजा से जो तस्व्वुर जिहन में उभरता वह यही था कि उस जजीरे (टापू) के आस पास का पानी कुदरती तौर पर बहुत ही काला होगा जिस को देख कर सब से पहले कैदियों की हालत घबराहट में ना गुफ्ता बेह (जिस का बयान न करना ही अच्छा हो) हो जाती होगी और फिर वहाँ के मनाजिर (दृश्य) भी ऐसे डरावने होंगे कि उन पर हैबत तारी हो जाती होगी। लेकिन जब 16 नवम्बर 2008 ई0 को पहली बार "इस्लामिक फाउन्डेशन आइस लैन्ड" की दअवत पर काला पानी (जजाइर इन्डोमान) पहुँचा तो मेरे उस गलत तस्व्वुर तखय्युल (कल्पना) की इस्लाह हो गई। न वहाँ के समुन्दर का पानी काला था न वहाँ के मनाजिर हैबतनाक थे। बल्कि यहाँ मुझे वह कुदरती व फित्री हसीन मनाजिर (प्राकृतिक सुन्दर दृश्य) देखने को मिले जो इस जमीन की जन्नत कही जाने वाली वादीए कशमीर और उस की बर्फ पोश गुलमर्ग की पहाड़ियों के बाद हमारे पूरे मुल्क में कहीं नजर नहीं आए।

हिन्दोस्तान से इन जजाइर की दूरी का अन्दाजा सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि इन्डोमान की जुनूबी (दक्खिनी) सरहद से मलोशिया सिर्फ एक सो किलो मीटर दूर है। इसी तरह उस की सरहद की लम्बाई का अन्दजा सिर्फ इस से होता है कि इस की शिमाली (उत्तरी) सरहद से बर्मा सिर्फ 120 कि0मी0 फासिले पर है। इन्डोमान पूरी दुन्या में इस एअतिबार से अपनी अलग पहचान रखता है कि वसती (बीच के) इन्डोमान में तकरीबन (लगभग) 600 मुरब्बा किलो मीटर के जजीरों में तहजीब व तमद्दुन से आरी (असभ्य) स्टोन एज के वहशी आज भी पाए जाते हें, जो हमेशा नंगे रहते हैं, पूरी दुन्या में उन की जबान कोई नहीं समझ सकता। वह मुहज्जब (सभ्य) इन्सारनों से दूर भागते हैं, जिन्दगी भर जगंलो से बाहर नहीं निकलते, उन के सर गोल हैं और आँखे बाहर निकली हुई लेकिन उन के दाँत बहुत ही चमकीले, सफेद और बाल घुंघरयाले हैं। उन की गिजा जंगली कीड़े मकोड़े (चूहे आदि) समन्दरी केचवे और जंगली फल हैं। आज भी वह माचिस के बजाए पत्थर रगड़ कर आग जलाते हैं। उन के मकानात और रहन सहन देख कर हर कोई यह कह सकता है कि यह हज़रत आदम के जमाने के लोग हैं। जमाने में होने वाले किसी भी वाकिअे की न उन को खबर न उससे कोई वास्ता। हुकूमत का कोई कानून उन पर नाफिज (लागू) नहीं होता। यह लोग मुहज्जब लोगों से दूर भागते हैं या उन पर हमला कर देते है। इन के इलाको (क्षेत्रों) पर सरकारी पहरा है, सरकारी इजाजत के बिना कोई वहाँ जा न्हीं सकता उन की सही तादाद का इल्म न हुकूमत को है न किसी और को।

उन जंगली लोगो के डर से मुहज्जब लोगों की हिम्मत वहाँ बसने की न हुई। अंग्रेजों ने 1789 ई0 में पहली बार कुछ हिन्दोस्तानी कैदियों को वहाँ भेजा था मगर आब व हवा मुवाफिक न होने से 90 फीसद लोग मर गये थे। फिर 1857 ई0 के गद्र के बाद 1858 ई0 में बहुत से कैदी भेजे गये और 1879 ई0 वहाँ की मुहज्ज़ेब आबादी 13,000 हो गई। दूसरी जंगे अजीम में इन्डोमान पर जापानियों का कब्जा हो गया, उन्हों ने भी वहाँ नव आबादिया काइम कीं, 1947 ई0 की आजादी में इन्डोमान के जजीरे भारती हुकूमत में आ गये।

इस वक्त इन्डोमान में 500

जजीरे हैं उन में से आबाद सिर्फ 30 हैं। यह जजाइर मरकज (केन्द्र) के इन्तिजाम में हैं, यहाँ न असम्बली है न वजीरे अअला (मुख्य मंत्री) बल्कि मरकज की तरफ से लफटीनेन्ट गवर्नर पूरे सूबे का निजाम (प्रबन्ध) चलाता है, पारिलीमान की यहाँ सिर्फ एक सीट है। पिछले एलेक्शन में पहली बार बी0जे0पी0 काबिज हो गई है। पूरा रकबा (क्षेत्र फल) 8250 मुरब्बा (वर्ग) कि0मी0 हैं, लेकिन आबादी सिर्फ साढे चार लाख के आस पास है जिन की जियादातर तादाद का तअल्लुक उन कैदियों की नसलों से है जो काला पानी की सजा से रिहाई के बाद यही रह गये थे। खुशी की बात यह है कि पूरे मुल्क में केराला के बाद यहाँ सब से जियाद तालीमी तनासुब (शैक्षणिक अनुपात) 82 फीसद (प्रतिशत) है। मुसलमानों की आबादी इस में लगभग 12 फीसद हैं।

जजाइर इन्डोमान बहरे हिन्द (हिन्द महासागर) में वाकेअ हैं। जिस का रकबा (क्षेत्र फल) सात करोड़ सैंतीस लाख मुरब्बा किलो मीटर है, यह पूरी दुन्या के 20 फीसद (प्रतिशत) पानीको घेरे हुए हैं, कुछ जगहों पर इसकी गहराई पच्चीस हजार फीट से भी जियादा है। बहरे अरब, खलीज फारस खलीज बंगाल इसी के भाग हैं। इस में करोड़ों हवेल मछलियाँ हैं जिन की लम्बाई डेढ़ सौ फिट तक होती है, अल्लाह तआला उन सब को रोजी पहुँचाता है।

हम जहाज से उतर कर एयर पोर्ट से बाहर निकले तो हमारे इस्तिकबाल को जनाब अब्दुलगनी साहिब अपने साथियों के साथ मौजूद थे। उन में जनाब यामीन साहिब थे जो एलेक्ट्रिक डिपार्ट के चीफ इन्जीनियर हैं, इन का दावत व तबलीग के काम से गहारा तअल्लुक है, अब्दुल गनी साहिब खुद यहाँ के बड़े ताजिरों में हैं। मगरिब बाद हम लोग होटल की लाबी में बातचीत कर रहे थे कि जलजले (भूंचाल) के झटके महसूस हुए। लोगों ने बताया वक्फे–वक्फे से (जब तब) जलजलों के झटके महसूस होना आम बात है।

दूसरे दिन हम लोगों ने इस्लामिक फाडन्डेशन के जेरे एहतिमाम अल उम्मत स्कूल व कालेज का मुआइना किया इस स्कूल में मौलाना अबुल हसन अली नदवी इस्लामिक अकेडमी भटकल की इस्लामियात पर तय्यार की गई किताबें (जो स्कूलों कालिजो के लिये के0जी0 से दसवे तक के लिये लिखी गई हैं) दाखिल हैं। दो सालों से अल उम्मत स्कूल के इस्लामियात के इम्तिहानात हमारी भटकल एकेडमी के इन्तिजाम में होते हैं और मुमताज (विशेष योग्यताँ वाले) तलबा को गोल्ड मिडल (शुद्ध सोने की गिन्नी) सिलवर मिडल और सरटीफिकेट वगैरह दिये जाते हैं। हमारा यह इस्लामियात का निसाब मुल्क के बहुत से स्कूलों और कालिजो में राइज हैं। इस साल 35 हजार से जाइद तलबा ने इस निसाब का इम्तिहान दिया।

अलउम्मत स्कूल शहर के बीचो बीच में वाकिअ है, इस में बारहवो तक तालीम होती है, साढ़े सात सौ से जाइद तलबा हैं जिस में 25 फीसद गैर–मुस्लिम बच्चे भी हैं। लेफटेन्ट गवरनर ने शहर से करीब अलग स्कूल के लिये डेढ़ ईकड़ जमीन दी है जहाँ उन का एक बड़ा तालीमी मन्सूबा जेरे अमल आने वाला है। इन्शा अल्ल्लाह तआला।

दूसरे दिन हम ने मुखतलिफ जजाइर की सैर की, उन जजीरों का भी दौरा किया जहाँ सिर्फ केराला के लोग आबाद हैं उन लोगों ने मनार घाट, मंजेरी, मुल्ला पूरम, काली कट वगैरह शहरों के नाम वहाँ के इलाकों के रख दिये हैं, जिन को हुकूमत ने भी मान लिया है। हम ने वह सेलोलर जेल भी देखी जिस में आजादी से पहले हजारों मुजाहिदीन को सालों कैद रखा गया था।

वहाँ मुजाहिदीन के नाम के कतबे भी देखे मगर अफसोस कि मुस्लिम मुजाहिदीन के नाम बराए नाम हैं। अलबत्ता शेर अली का नाम नुमायाँ है जिस ने 1872 ई0 में आजादी के लिये वाएसराए को कत्ल किया था। 1879 ई0 में उसी जेल में उन को फाँसी दी गई थी। जेल के मुआइनें से वापसी पर इन्डोमान के अमाएदीन दानिशवर और मुखतलिफ इदारों के जिम्मेदारों और मुस्लिम सरकारी अफसरों के मजमेअ में मेरी तकरीर हुई।

**शेष पृष्ठ 35**

# ज़िक्रे मीलादुन्नबी

## (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

- इदारा

सारी तअ़रीफ़े उस अल्लाह के लिये है जो सारे जहानों का रब है, रोज़े जज़ा का मालिक है। आओ हम सब मिल कर कहें : ऐ अल्लाह! हम सब सिर्फ़ तेरी इ़बादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद तलब करते हैं, हम को सीधा रास्ता दिखा दे और उस पर चला दे, वह रास्ता जिस पर लोग चले तो आप ने उन को तरह़--तरह़ के इनआ़मात दिये, ऐसे बुरे लोगों का रास्ता नहीं कि जिस पर चलने वालों पर तेरा ग़ज़ब हुआ न भटके हुओं का रास्ता। आमीन या रब्बल आलमीन।

अल्लाह ने कैसी मुफ़ीद और कार आमद ज़मीन बनाई जिस पर हम रहते बसते हैं, ऊपर नीले आसमान का सायबान तान दिया, उस के अंदर सूरज चान्द, तारे रौशन कर दिये, दिन काम करने और रोज़ी कमाने को बनाया और रात आराम करने को बनायी। अपनी मख़लूक में इन्सान को सब से अफ़ज़ल बनाया और इन्सानों में अपने प्यारे और आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़ैरुलबशर और रह़मतुलिल्ल आलमीन बनाया इस वक़्त इस मजलिस में उन ही का मुबारक ज़िक्र करना है। शिअ़र :

रह़मते आ़लम पे या रब अस्सलाम
उन की आल औलाद पर भी अस्सलाम
उन के सब असह़ाब पर भी अस्सलाम
अस्सलामो अस्सलामो अस्सलाम

अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़लूक़ को सीधा रास्ता दिखाने और उस पर चलाने के लिये बहुत से नबियों और रसूलो को भेजा, सब से पहले नबी जो सब से पहले इन्सान भी थे वह हम सब के जद्दे अमजद ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम थे, फिर नबियों और रसूलो का एक सिल्सिला चला उन ही में ह़ज़रत नूह़, ह़ज़रत इब्राहीम, ह़ज़रत मूसा और न जाने कितने पैग़म्बर भेजे गये इन सब पर अल्लाह की रह़मत और सलामती हो। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से लग भग पाँच सौ पचास साल पहले ईसा अ़लैहिस्सलाम का ज़माना था, यहूदियों ने उन की बड़ी मुख़ालफ़त की, यहाँ तक कि उन को सलीब पर चढ़ा देने का फ़ैसला कर लिया, ऐसे मौक़ेअ़ पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को फ़िरिश्तों के ज़रीअ़े आसमानों पर उठा लिया और एक दूसरे शख़्स को ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शक्ल का कर दिया जिस को यहूदियों ने सलीब पर चढ़ा दिया उस के बाद दुन्या में बड़ा फ़साद फैला, इन्सानीयत तिल मिला उठी, जुआ, शराब, ज़िना, क़त्ल सारे गुनाह खुल्लम खुल्ला होने लगे, बच्चियाँ ज़िन्दा दफ़्न की जाने लगीं तो अल्लाह तआ़ला की रह़मत जोश में आई और अल्लाह तआ़ला ने अपने मह़बूब और आख़िरी नबी को तमाम आ़लम पर रह़मत बना कर भेजने का फ़ैसला फ़रमाया आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वालिदा का नाम आमिना था और वालिद साहिब का नाम अ़ब्दुल्लाह था। अल्लाह की मर्ज़ी और उस की मसलहत आप अभी पैदा नहीं हुए थे कि वालिद साहिब अ़ब्दुल्लाह का इन्तिक़ाल हो गया, जवान बेटे के इन्तिक़ाल पर आप के दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब को बेटे के इन्तिक़ाल का बड़ा दुख था कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश से दुख दूर हुआ और बड़ी ख़ुशी हुई।

बीबी आमिना बड़ी किस्मत वाली थीं कि वह अल्लाह के आख़िरी और मह़बूब नबी की माँ बनीं जब हमारे हुज़ूर आप के बतने मुबारक में थे तो उस ज़माने में ह़ज़रत आमिना ने जो अनवार व बरकात देखे उनको वह सोच भी न सकती थीं। न कोई तकलीफ़ न कोई गरानी, बहुत अच्छे अच्छे ख़्वाब दिखाई देते, ख़्वाब में फ़िरिश्ते आकर मुबारकबाद देते, जिस से उन को अन्दाज़ा होता कि उनके शिकमे मुबारक में जो बच्चा पल रहा है वह कोई गैरमामूली बच्चा है, आप की पैदाइश मशहूर क़ौल के

मुताबिक़ फ़ील के वक़िअे के पचास रोज़ बाद 12 रबीउल अव्वल पीर के रोज़ सुबह सादिक़ के वक़्त हुई। सल्लालाहु अ़लैहि वसल्लम।

रहमते आ़लम पे या रब अस्सलाम
उनकी आल औलाद पर भी अस्सलाम
उनके सब असहाब पर भी अस्सलाम
अस्सलामो अस्सलामो अस्सलाम

मक्का मुकर्रमा में उस वक़्त यह दस्तूर था कि क़ुरैश ख़ानदान में जो बच्चा पैदा होता, आस पास के गाँव से दूध पिलाने वाली औरतें आतीं और बच्चों को लेजाकर अपना दूध पिलातीं और जब बच्चे का दूध छूटता तो उनके वालिदैन को वापस कर जातीं और अपना इनआ़म व इकराम लेतीं। इसी रिवाज के मुताबिक़ आप को दाई ह़लीमा ले गईं, दाई ह़लीमा आप की बरकात देखकर हैरान रह गईं, आप की खुली हुई बरकात देखकर ही दूध छुड़ाने के बअ़द भी बीबी आमिना से इजाज़त लेकर अपने पास रखा। आपने वहाँ अपने दूध शरीक भाई के साथ बकरियाँ भी चराईं फिर दाई ह़लीमा आप को आप की वालिदा को सौंप गईं छे साल की उम्र में मुहतरम वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया। दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब ने अपने पास रखा, अल्लाह की मर्ज़ी आप दस साल के हुए तो दादा जान भी न रहे। अब आप चचा अबू तालिब के पास रहने लगे, यहाँ तक कि आप जवान हो गये और अपने रहने खाने का इन्तिज़ाम ख़ुद कर लिया लेकिन चचा से गहरा तअ़ल्लुक़ बाक़ी रहा।

आप की सिहत बहुत अच्छी थी, आप ख़ूबसूरती में भी यक्ता थे। मक्के में एक मालदार औरत बीबी ख़दीजा थीं। आप ने उन के माल से तिजारत की, बीबी ख़दीजा ने आप के ग़ैर मअ़मूली हालात देखे और तिजारत में ग़ैर मअ़मूली बरकत देख कर बहुत मुतअस्सिर हुईं, बीबी ख़दीजा चालीस साल की थीं वह बेवा थीं अल्लाह ने आप को दौलत भी दी थी और हुस्न भी, कई ऊंचे लोगों ने आप को शादी का पैग़ाम दिया था मगर आप ने इन्कार कर दिया था लेकिन वह हमारे हुज़ूर से ऐसी मुतअस्सिर हुईं कि ख़ुद पैग़ाम भेजा, हमारे हुज़ूर उस वक़्त पचीस साल के थे, आप ने पैग़ाम क़बूल किया और निकाह पढ़ा लिया। सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

अल्लाह के इ़ल्म में तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अज़ल ही से ख़ातिमुल अंबिया थे लेकिन जब चालीस साल के हो गये आप ग़ारे हिरा में अल्लाह की याद में खोए हुए थे कि अल्लाह तआ़ला ने जिब्रील अमीन को भेजा, जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने आप को "इक़–रअ्" की इब्तिदाई आयतें पढ़ाई, यअ़नी अल्लाह तआ़ला ने आप को नबी व रसूल का मन्सब (पद) अ़ता फ़रमा दिया और क़ुर्आन मजीद की पहली वह्य (वही) नाज़िल हो गई। सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

एक रोज़ अल्लाह के हुक्म से आप ने क़ुरैश को बुलाया और उन को बताया कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं है, तुम सब इस बात को मान कर ज़बान से इस का इक़रार कर लो यअ़नी *"ला इलाह इल्लल्लाह"* कह लो तो काम्याब हो जाओगे और बताया कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। यह एअ़लान सुन कर नेक रूहों वाले तो आप की जानिब मुतवज्जेह हुए, लेकिन बुरी रूह वाले आप के मुख़ालिफ हो गये यहाँ तक कि आप का हक़ीक़ी चचा अबू लहब भी आप का दुश्मन हो गया, अबू जहल भी दुश्मन बना लेकिन अच्छे लोग ईमान लाने लगे, औरतों में हम मुसलमानों की माँ बीबी ख़दीजा ईमान लाईं, मर्दों में हज़रत अबू बक्र ईमान लाए, लड़कों में हज़रत अ़ली ईमान लाए ग़ुलामों में हज़रत ज़ैद ईमान लाए अल्लाह तआ़ला इन सब से राज़ी हुआ, अब यह सिलसिला चल पड़ा शैतान का काम भी जारी रहा, जो ईमान लाते क़ुरैश के मालदारों की तरफ़ से सताए जाते, सहाबा ने और ख़ुद हुज़ूर सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसी ऐसी तकलीफें उठाई हैं कि उन के ज़िक्र से रौंगटे खड़े होते हैं। यहाँ तक कि एक रात कुरैश ने मआ़ज़ल्लाह आप के क़त्ल के इरादे से आप के घर को घेर लिया तब अल्लाह के हुक्म से आप घर से निकले यह आप का मुअ़जिज़ा था कि कोई आप को देख न सका, आप ने हज़रत अबू बक्र को साथ लिया और मदीना तय्यिबा पहुँच गये। बहुत से सहाबा पहले ही मदीना आ चुके थे अब मदीना तय्यिबा

इस्लाम का मरकज़ था, इस्लामी हुकूमत क़ाइम हो चुकी थी इस्लाम बराबर फैलता रहा और मुसलमानों की क़ुव्वत बराबर बढ़ती रही यहाँ तक कि एक दिन वह आया कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम अपने सहाबा के साथ मक्का मुकर्रमा में फातिहाना दाख़िल हुए, कअ़बा जो बुतों से घिरा भरा था पाक किया, जाहिली ह़ज्ज ख़त्म किया, इस्लामी ह़ज्ज की तअ़लीम दी, अब मक्का भी इस्लामी हुकूमत में शामिल हो गया मगर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मदीने को वतन बना लिया था आप मक्के से मदीना वापस आ गये। यहीं से इस्लामी निज़ाम चलाते रहे, वहीं से सफ़र कर के विदाअ़ी–ह़ज्ज किया जब दुन्या में आप का काम पूरा हो गया और दीन मुकम्मल हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने आप को बुला लिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आप की वफात उम्मुलमोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि0) के हुजरे में हुई, उसी हुजरे में आप की क़ब्रे मुबारक है जिस की ज़ियारत और सलात व सलाम पेश करने के लिए हर वक्त इतनी भीड़ रहती है कि अगर सऊ़दी हुकूमत के सिपाही कन्ट्रोल न करें तो न जाने कितने लोग कुचल कर मर जाएं। करोड़ों दुरुद हों आप पर और करोड़ों सलाम।

अस्सलाम हम सब के आक़ा अस्सलाम
अस्सलाम हम सब के मौला अस्सलाम
रह़मतें हों आप पर या रब मुदाम
उन के सब अस्हाब पर भी या सलाम

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबियों और रसूलों को नुबुव्वत व रिसालत की पहचान के तौर पर मुअ़जिज़ात दिये, जैसे ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ऐसी लाठी दी जिसे आप ज़मीन पर रख देते तो अजगर साँप बन जाती, ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम कोढ़ियों को अच्छा कर देते, पैदाइशी अन्धों को बीना कर देते वग़ैरह हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह ने बहुत मुअ़जिज़े दिये थे। आप का सब से अहम मुअ़जिज़ा क़ुर्आन मजीद है कि उस की छोटी सी छोटी सूरत जैसी आज तक न कोई बना सका न आइन्दा बना सकेगा। यह अलग बात है कि क़ुर्आने मजीद के एअजाज़ को तो इ़ल्म वाले ही समझ पाते हैं लेकिन इतना तो हम सब भी जानते हैं कि क़ुर्आन की ज़बान अ़रबी है, आज दुन्या के कोने–कोने के मुस्लिम बच्चे जिन की ज़बान अ़रबी नहीं है, पूरा कुर्आन ज़बानी याद कर लेते हैं और ज़बर ज़ेर की ग़लती के बिग़ैर रवानी से ज़बानी पढ़ते हैं और तरावीह़ में सुनाते हैं, यह कुर्आन का मुअ़जिज़ा ही है जो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ। आप के मुअ़जिज़ात में से अहम मुअ़जिज़ा मिअ़राज का सफ़र है कि रातों रात आप बुराक़ पर सवार हो कर मक्के से बैतुल मक़दिस फिर वहाँ से आसमानों पर सिदरतुल मुन्तहा तक फिर अल्लाह तआ़ला से गुफ़्तगू, जन्नत दोज़ख़ का मंजर देखना, वहीं पाँच वक्त की नमाज़ का तुहफा मिला फिर रात ही में आप वापस आ गये यह मिअ़राज का मुअ़जिज़ा था। अब कुछ मुअ़जिज़े नज़्म में पेश हैं–

बे अ़दद हैं आप के तो मुअ़जिज़ात
आप की थी मुअ़जिज़ा हर एक बात
बदला जब मिंबर रसूलुल्लाह ने
उस्तुने ह़न्नाना रोया चाह में
हाथ रख कर आप ने फिर चुप किया
सिस्किया लेता हुआ वो चुप हुआ
जब इशारा आप ने इक कर दिया
कंकरीयों ने वहीं कल्मा पढ़ा
इक इशारा पाते ही तो चान्द के
बे रुके फ़ौरन ही दो टुकड़े हुए
बारहा पत्थर से निकला ये कलाम
या नबीयल्लाह तुम को अस्सलाम
और ये है बात सच्ची ला कलाम
आप को अशजार करते थे सलाम
और हुदैबीया में सुन लो क्या हुआ
आप के लोटे में थोड़ा पानी था
पन्दरा सौ प्यास से बेताब थे
ढूंन्ढते पानी सभी अस्ह़ाब थे
जब कहा सब ने रसूलुल्लाह से
लोटे में पानी है बस अब आप के
लोटे में फिर हाथ डाला आप ने
चश्मा उबला उंगलियों के बीच से
सब ने जी भर भर के फिर पानी पिया
और वुज़ू भी पन्दरा सौ ने किया
पानी में बरकत के किस्से हैं कई
सब बयाँ हों इस का यॉ मौक़अ नहीं
ह़ज़रते जाबिर का सुन लो माजरा
आटा उन के घर में बस इक साअ़ था
ज़ब्ह़ इक बकरी का बच्चा कर लिया
और रसूले पाक को मदऊ किया
काम पर मौजूद था मजमअ़ वहाँ
खोद कर ख़न्दक़ बनाना था वहाँ
आप ने एअ़लाने दअ़वत कर दिया
ह़ज़रते जाबिर का दिल घबरा गया

**शेष पृष्ठ 38**

क़िस्त एक

# इस्लामी अख़्लाक़ (नैतिकता) क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में(१)

- मौ० सै० अब्दुल्लाह हसनी नदवी

- नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अल्लाह ही इन्सान और समस्त जगत का सृष्टा व मालिक है, अतः वह उनकी विशेषता और दुर्बलता से अति परिचित है। इसी सन्दर्भ में उसने सन्देष्टाओं को भेजा ताकि वह इन्सानों की कमजोरियों व खूबियों को स्पष्ट करके सत्य मार्ग दिखाएं। सबसे अंत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा अत्यन्त विस्तार से आदेश भेजे ताकि बहाना बनाने का अवसर न मिले और कोई ये न कह सके कि ये बात हमको मालूम न हो सकी। इसी सिलसिले की महत्वपूर्ण कड़ी नैतिकता से सम्बन्धित हैं कौमों का उदय व पतन भी इसी से जुड़ा है। किसी कौम का नैतिक पतन पहले शुरू होता है, राजनैतिक पतन बाद में होता है। आंशिक तौर पर नैतिकता से सम्बन्धित आदेश तो हर जगह मिल जाऐंगे लेकिन जिस विस्तार और सुक्षमदर्शिता से इस्लाम ने उसकी व्याख्या की है वह कहीं और तलाश करना बेकार है। उसका एक संक्षिप्त खाका आपके सामने पेश किया जाता है। पहले नैतिकता के अच्छे पहलू के कुछ नमूने आप देखेंगे उसके बाद बुरे पहलू के सम्बन्धित इस्लामी शिक्षा पर दृष्टि डाली जाऐगी।[1] अतः हमेशा से यही दस्तूर है कि कुछ चीजों का आदेश दिया जाता है और कुछ जीचों से दूर रहने की शिक्षा दी जाती है।

उच्च नैतिकता से सम्बन्धित आपकी सामान्य शिक्षा ये थी कि आप (सल्ल0) ने फरमाया "निःसन्देह अल्लाह बुलन्द हौसले के बड़े काम पसन्द करता है और छोटी व घटिया बातें नापसन्द करता है।

हज़रत अबूहुरैरः (रज़ि0) कहते हैं कि आप सल्ल0 ने फरमाय "कमजोर मुसलमान से शक्तिशाली मुसलमान अधिक अच्छा है और खुदा के निकट प्रिय है और हर एक में भलाई है, हर वह चीज जो तुझे फायदा दे उसकी पूरी कामना करो और अल्लाह से मदद चाहो इस रास्ते में दुर्बलता न दिखाओं भौर यदि इस रास्ते में तुझे तकलीफ पहुँच जाऐ तो ये न कह कि यदि मैं ऐसा करता तो वैसा हो जाता बल्कि ये कह कि अल्लाह ने भाग्य में लिख दिया था और जो चाहा उसने किया क्योंकि अगर (और मगर) शैतान का कारोबार खोलता है।"

दरअस्ल इन्सान के उत्साह, आशा और दृढ़ता में इन बातों का बड़ा हस्तेक्षप है। यदि संकल्प और विश्वास से किसी काम को शुरू करे और सफलता मिले तो गर्व व घमण्ड में चूर नहीं होना चाहिए बल्कि शुक्र की भावना उभरनी चाहिये कि ये केवल अल्लाह की कृपा से सम्भव हुवा और यदि असफलता का स्वाद चखना पड़े तो ना उम्मीदी के दलदल में नहीं गिरना चाहिये बल्कि संयम और धैर्य से सहना चाहिये और समझना चाहिये कि अल्लाह की यही मर्जी थी, उसी को कुर्आन ने इस तरह बयान किया है। अनुवाद "कोई मुसीबत नहीं आती जमीन पर और न तुम पर लेकिन ये कि वह उसके पैदा करने से पहले अल्लाह की किताब में दर्ज होती है ये अल्लाह पर बहुत आसान है, ये इसलिये कि ताकि उसपर जो तुम से जाता रहे चिन्ता न करो और जो तुमको अल्लाह दे उसपर न इतराओ, अल्लाह किसी इतराने वाले बडाई हाँकने वाले को पसन्द नहीं करता"

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "मोमिन का मामला भी विचित्र है उसका सभी मामला लाभदायक है, ये चीज केवल मोमिन (एकेश्वर वादी) ही को प्राप्त है, यदि सम्पन्नता व खुशहाली आती है तो शुक्र करता है तो ये उसके हक में अच्छा होता है

1. विस्तार हेतु देखें सीरतुन्नबी जिल्द 6, अस्लामा सै0 सुलेमान नदवी व नबीये रहमत मो0 सै0 अबुल हसन।

और अगर निर्धनता व दरिद्रता से पीड़ित होता है तो सन्तोष करता है तो ये उसके हक में बेहतर होता है।"

## शत्रुओं के साथ व्यवहार

अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) ने दुश्मनों के साथ अच्छा व्यवहार करने की स्पष्ट शिक्षा दी है, उन्हें क्षमा करने, उनके साथ शालीन व्यवहार करने, उनके लिये दुआऐं करने और यदि अत्याचार करें तो भी न्याय करने की शिक्षा दी है पवित्र कुर्आन में है "ऐ इमान वालो! खुदा के लिये खड़े हो जाया करो, इन्साफ के साथ गवाह बनकर, और किसी कौम की दुश्मनी तुमको न्याय करने से दूर न रखे, इन्साफ करो इन्साफ करना परहेजगारी (संयमता) से अति निकट है और खुदा से डरो, उसको तुम्हारे कामो की खबर है" अल्लाह उसी पवित्र कुर्आन में कहता है कि "भलाई और बुराई बराबर नहीं, बुराई को भलाई से दूर करो तो सहसा वह जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी है, रिश्तेदार व दोस्त के भांति हो जाऐगा और इसपर अमल का सौभाग्य उन्हीं को होता है जो सन्तोष करते हैं और उन्हीं को सौभाग्य प्राप्त होता है जो बड़ा भाग्यशाली है, और यदि शैतान तुमको उकसाऐ तो खुदा की पनाह माँगो की वह सुनने वाला और जानने वाला है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) इसकी व्याख्या करते हैं कि अल्लाह ने मुसलमानों को रोष–प्रकोप की स्थिति में सन्तोष का और किसी के बुराई करने पर क्षमा तथा सहनशीलता का आदेश दिया है। वह ऐसा करेंगे तो खुदा उनको शैतान के पंजे से छुडाऐगा और उनका दुश्मन भी दोस्त की तरह आगे सर झुका देगा। (सहीह बुखारी जि0 2)

एक बार एक व्यक्ति ने हज़रत अबुबक्र सिद्दीक (रज़ि0) को जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे गाली दी, वह सुनकर चुप रहे, उसने दोबारा वही कृत्य किया, वह फिर भी चुप रहे, उसने फिर तीसरी बार अपशब्द कहे तो वह चुप न रह सके और कुछ बोल पड़े। ये देखकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) तुरन्त उठ गये। हज़रत अबुबक्र (रजि0) ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) क्या आप मुझसे नाराज हो गये, फरमाया ऐ अबुबक्र (रजि0) जब तक तुम चुप थे तो खुदा का फरिश्ता तुम्हारी ओर से खड़ा था जब तुम ने जवाब दिया तो वह हट गया। (अबू दाऊद किताबुलअदब)

स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने दुश्मनों को माफ किया है और उस समय माफ किया जब आप उनसे बदला लेने की क्षमता रखते थे और ऐसे शत्रुओं को क्षमा किया जो आपके खून के प्यासे थे और आप (सल्ल0) ने अपने चचा के हत्यारे को और कलेजा चबाने वाली औरत दोनो को माफ किया। आप (सल्ल0) ने खैबर में जहर देने वाली यहूदी औरत को माफ किया और मक्का के उन हजारों शत्रुओं को क्षमादान दिया जो आपके खून के प्यासे रह चुके थे, और आप (सल्ल0) ने उन तायफ वालों के लिये मंगलकामना की जिन्होंने आप (सल्ल0) पर पत्थरों की बारिश की थी और आप (सल्ल0) के पैरो को लहुलुहान किया था। आप (सल्ल0) से जब ये कहा गया कि आप दुश्मनों के लिये बददुआ करें आप (सल्ल0) ने उनसे फरमाया : मैं दुनिया में लानत के लिये नहीं बल्कि रहमत के लिये आया हुँ।

इस्लाम ने नफरत की भावना को सिरे से समाप्त नहीं किया है क्योंकि ऐसा करना प्रकृति विधान से आखें चुराना है। अप्रसन्नता, घृणा और विरोध इन्सान के स्वभाव में हैं। उनको कुचला नहीं जा सकता, हाँ मोड़ा जा सकता है इसीलिये इस्लाम ने उन भावनाओं के प्रयोग का उचित अवसर और स्थान तय कर दिया है। वह ये है कि उनका आधार अल्लाह की प्रसन्नता व अप्रसन्नता हो, व्यक्तिगत स्वार्थ, निजी उद्देश्य और अन्दरूनी बिमारी न हो बल्कि केवल अल्लाह ही के लिये घृणा और द्वेष हो और उसी के लिये प्रेम और मित्रता हो।

एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने सहाबा (रजि0) से पूछा कि कौन सी नेकी खुदा को अत्याधिक प्यारी है, किसी ने नमाज किसी ने जकात, किसी ने जेहाद बताया, आप (सल्ल0) ने फरमाया : तमाम नेकियों में सबसे अधिक खुदा को ये नेकी पसन्द है कि खुदा ही के लिये प्रेम और खुदा ही के लिये विरोध हो (मुस्नद अहमद) अतः मन व इच्छा ही पैरवी से भी रोका गया है

**शेष पृष्ठ 35**

# आप किस तरह पायलेट बन सकते हैं?

- तसनीम फातिमा

इस तेज रफ्तार प्रगति के दौर में लोग कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा काम करने की इच्छा और आवश्यकता के तहत सफर के लिये हवाई जहाज को महत्व देते हैं। हवाई सफर के बढ़ते हुए रूजहान के मुताबिक इस क्षेत्र में प्रगति हो रही है। और इसी की मुनासिबत से इसमें कैरियर की सम्भावना बढ़ रही है। वर्तमान समय में इस क्षेत्र में काम करने की सम्भावना की कमी में जो आशँका प्रकट की जा रही है वह सामायिक है क्योंकि इतने विशाल क्षेत्र का किसी कारण सिकुड़ जाना सम्भव नहीं है। इस क्षेत्र से जुड़ना बहरहाल उज्जवल भविष्य की जामिन है। इसके लिए विशेष ट्रेनिंग के अलावा खुद मैं गैर–मामूली काबलियत व सलाहियत पैदा करके तरक्की की जा सकती है। पयलेट या को–पायलेट का पद एक बहुत बड़ा चैलेन्ज होता है और इस चैलेन्ज को स्वीकार करके अपनी सही सोच और बुद्धि का सबूत देने वालों को उतने ही लाभ भी होते हैं अगर आपको पायलेट बनना है तो इसके लिए आपको स्ट्रडेन्ट्स पायलेट लाइसेन्स (एस0पी0एल0) प्राइवेट पायलेट लाइसेन्स (सी0पी0एल0) प्राप्त करना होगा। एस0पी0एल0 ट्रेनिंग का पहला चरण है जो हिन्दुस्तान में 23 फ्लॉइग क्लब्स की तरफ से जारी किया जाता है। इसे प्राप्त करने के लिए ऑब्जेक्टिव टाइप लिखित परीक्षा में कामयाबी प्राप्त करनी होती है। जो एयर क्रॉफ्ट इंजन्स और एयर हाइनिमिक्स की बुनियादी गणित से सम्बन्धित होता है। प्रश्नपत्र 100 अंकों का होता है जिसमें कामयाबी के लिए कम से कम 75 नम्बर हासिल करना जरूरी है। उपरोक्त टेस्ट के लिए फ्लॉइग क्लब्स की तरफ से आदर्श प्रश्नों पर आधारित मेनुअल जारी किया जाता है। एस0पी0एल0 इम्तेहान देश के विभिन्न फ्लाइंग क्लबस की तरफ से हर महीने आयोजित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त डायरेक्टर जनरल ऑफ सिविल एवियेशन की तरफ से एक परीक्षा आयोजित की जाती है जिसमें सफलता पर असिस्टेन्ट फ्लाइट रेडियो, टेलीफोन ऑपरेटर का लाइसेन्स जारी किया जाता है। प्राइवेट पायलेट लाइसेन्स दूसरा चरण है जो फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के तहत 40 घन्टे की तरंबियती परवाजों और 20 घन्टे तन्हा परवाजों के बाद जारी किय जाता है और इसके साथ–साथ एक लिखित परीक्षा भी पास करनी होती है जिसमें एयर क्रॉफ्ट इंजन, एयर नेविलेशन, एवियेशन, मेट्रोलॉजी और सीमैनशिप से सम्बन्धित उम्मीदवार की मालूमात का इम्तेहान लिया जाता है। यह इम्तेहान डायरेक्टर जनरल सिविल एवियेशन की तरफ से आयोजित किया जाता है जिसे पूरा करने में आम तौर पर दो साल लगते हैं। तीसरे चरण में कमर्शियल पायलेट लाइसेन्स को हासिल करने के लिए कम से कम 250 घन्टे की उड़ान वांछित होती है जिनमें पी0पी0ई0 की 60 घन्टे की उड़ाने सम्मिलित हैं। सी0पी0एल0 प्राप्त करने के लिए 200 घन्टे की तन्हा परवाजों का अनुभव आवश्यक है और साथ ही एयर रेगुलशन, एवियेशन मेट्रोलाफजी, एयर नेविलेशन, मैक्नीकल प्लानिंग एण्ड कम्यूनिकेशन इन रेडियो एण्ड वायरलेस ट्राँसमिशन जैसे विषयों पर आधारित लिखित परीक्षा कामयाब करनी होती है। इसके बाद डायरेक्टर जनरल सिविल एवियेशन और एयरफोर्स यूनिट के तहत सेन्ट्रल मेडिकल स्टैबलिशमेन्ट की तरफ से मेडिकल फिटनेस टेस्ट से भी गुजरना होता है। आमतौर पर कमर्शियल पायलेट ट्रेनिंग की मुद्दत एक साल होती है। सी0पी0एल0 की प्राप्ति के बाद उम्मीदवार को हैदराबाद में ट्रेनिंग करना होता है।

शेष पृष्ठ 25

# ? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

**मुफ़्ती मु० ज़फर आलम नदवी**

**प्रश्न** : औरतों के लिये कानों में बाला या नाक में नथ पहनना जाइज है या नहीं? इस लिये कि इस के लिये कान और नाक में छेद करना पड़ता है।

**उत्तर** : खुलासतुल फतावा जिल्द 4 पेज 377 में है "ला बअस बिसक्बि उजुनिन मिनल् बनाति" बच्चियों के कान में सूराख करने में कोई हरज नहीं है। लड़कियाँ जेब व जीनत के लिये नथ, बाला, रिंग पहन सकती हैं। इसी तरह बालों में खूबसूरती के लिये चान्दी, सोने या किसी घात के कान्टे नीज़ फूल वगैरह लगाने की इजाजत है। फतावा आलमगीरी जिल्द 5 पेज 359 पर है : औरतों के लिये जीनत के तौर पर अपने बालों पर पीतल, ताँबे, लोहे वगैरह के नगीने लगाने में कोई हरज नहीं।

**प्रश्न** : घड़ी दाहने में बाँधना चाहिये या बाएं हाथ में?

**उत्तर** : घड़ी जहाँ जीनत का सामाना है वहीं जरूरत की चीज भी है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में इसकी बेहतरीन नजीर अंगूठी है, जिस में जीनत भी थी और जरूरत भी थी कि बादशाहों को खत लिखते वक्त उससे मुहर लगाई जाती थी। नक्ल किया गया है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दाहने हाथ में भी अंगूठी पहनी है जिस के रावी हज़रत अनस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जअ़फर और हज़रत अली हैं। (बुखारी) और बाएं हाथ में भी पहनी है, जिस के रावी हज़रत अनस और हज़रत अब्दल्लाह बिन उमर है। (मुस्लिम) इस लिये घड़ी चाहे दाहने हाथ में बान्धे या बाएं हाथ में मगर चूंकि अक्सर खैर की चीजों में हमारे हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दाएं को तर्जीह दी है और घड़ी भी खैर का जरीआ है कि इस से नमाज और इबादात के औकात मालूम होते हैं इस लिये दाएं हाथ में पहनना जियादा बेहतर होगा।

**प्रश्न** : घड़ी में स्टील की चैन के इस्तिअमाल का क्या हुक्म है?

**उत्तर** : आज कल घड़ियों में लोहा और स्टील की चैन का इस्तिअमाल आम है, यह जाइज है। घड़ी की हिफात के लिये यह चैन हाजत का दर्जा रखती है, और फुकहा का उसूल है कि कभी हाजत भी जरुरत का दर्जा इख्तियार कर लेती हे जिस की वजह से ना्जाइज चीज भी जाइज हो जाती है। यह बात इस लिये कही जा रही है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोहे की अंगूठी को मनअ फरमाया है, उस पर कयास कर के कोई कह सकता है कि लोहे की चैन भी मनअ होगी लेकिन हाजत के सबब उस का इस्तिअमाल जाइज होगा, फिर अंगूठी पर हल्का लोहे का होता है, जब चैन घड़ी का एक जुज होती है, घड़ी की ताबिअ होती है लिहाजा घड़ी के साथ स्टील की चैन का इस्तिमाल जाइज है।

**प्रश्न** : किसी मरीज को किसी सिहत मन्द का खून चढाने का क्या हुक्म है?

**उत्तर** : एक इन्सान का खून तिब्बी जरूरत की बिना पर दूसरे इन्सान के जिस्म में चढ़ाना नाजाइज है। हनफी फुकहा का अस्ल फतवा यही है कि जो चीजें हराम हो उन से इलाज दुरुस्त नहीं, फिर खून के हराम होने के दो दो सबब मौजूद है, एक तो वह नापाक और नजिस है, दूसरे इन्सान का जुज्व है, जिस से फाइदा उठाना इन्सानियत के एहतिराम के खिलाफ है, मगर चूंकि अकसर फुकहा ने जरुरत की बिना पर इलाज के तौर पर हराम चीजों के इस्तिअमाल को दुरुस्त करार दिया है, कुर्आन व हदीस की बअज तसरीहात से इस का जवाज मालूम होता है, इस लिये कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इलाज के तौर पर उरैना के लोगों को ऊँट का पेशाब पीने की हाजजत

दी थी, हज़रत अरफजा को सोने की नाम बनाने का हुक्म दिया था जो मर्दों के लिये हराम है और सख्त मना है। इजतिरार और मजबूरी में जान बचाने के लिये मुरदार और सुअर का गोश्त खाने की इजाजत दी है जिस का हराम होना सरीह और कतई है। इन अस्बाब से हनफी उलमा ने भी बअद को हराम चीजों से इलाज (तदावी बिलहराम) की इजाजत दे दी है। फुकहाए मुतअख्खिरीन की किताबों में इस की बहुत सी नजीरें मौजूद हैं लिहाजा इलाज के तौर पर एक इन्सान का खून दूसरे इन्सान के जिस्म में डाला जा सकता है अलबत्ता उसकी यह शर्तें होंगी :

**1.** खून के अलावा कोई दूसरी मुतबादिल (बदले में) दवा न हो जिससे मरीज की जान बच सके या सिहतयाब हो सके।

**2.** कोई माहिर तबीब (डाक्टर) खून के इस्तिअमाल को नागुजीर (जिस के बिना काम न चल सके) करार दे दे। सिर्फ जिस्म में ताकत लाना या खूबसूरती बढ़ाना मकसद न हो कि यह जरूरत के दर्जे की चीज नहीं।

इसी तरह अगर कोई ऐसी दवा मौजूद है जिस के इस्तिअमाल से सिहत का इम्कान तो हो मगर उस में देर का अंदेशा हो, इस सूरत में भी बेहतर है कि खून चढ़ाने से बचा जाए क्योंकि ऐसी सूरत में हराम चीजों से इलाज के जाइज होने में फुकहा के दरमियान इख्तिलाफ है।

**प्रश्न** : हराम जानवरों की चरबी या गोश्त का दवा के तौर पर इस्तिअमाल करना कैसा है?

**उत्तर** : हशरातुलअर्ज यअनी ऐसे कीडे मकोडे जिन में बहता खून नहीं उन को दवा के तौर पर जिस्म पर बाहरी इस्तिअमाल दुरुस्त है वह पाक है उनको तेल में पकाया जाए तो वह तेल भी पाक है, या उससे मरहम बनाया जाए वह भी पाक है जिस्म पर बाहरी इस्तिअमाल दुरुस्त है खाया नहीं जा सकता सुअर और कुत्ते के अलावा उन तमाम हराम जानवरों का यही हुक्म है जो शरअी तरीके से जब्ह कर लिये जाएं।

वह हलाल या हराम जानवर जो जब्ह के बिगैर मर गये, वह कीड़े मकोड़े जिन में बहता खून है नीज सुअर कुत्ता इन को तेल में पका कर कोई दवा बनाई जाए या इन की चरबी से कोई दवा बनाई जाए इन की चरबी और उससे तय्यार दवा सब नजिस होंगे उन का इस्तिअमाल दुरुस्त न होगा, सख्त जरुरत पर हुक्म बदल जाएगा, जरूरत पर मुफ्तियाने किराम से रजूअ करना चाहिये। (तमाम जवाबात जदीद फिक्ही मसाईल की मदद से लिखे गये)

❑❑

**आप किस तरह से पायलेट.....**

घरेलू परवाजों के लिए मल्टी इंजन एयर क्रॉफ्ट की तन्हा परवाज के कम से कम 15 घन्टों का अनुभव जरूरी है। हैदराबाद में ट्रेनिंग 6 महीने की होती है। परवाजों की फीस 3 से 5 हजार लगभग प्रति घन्टा है। एक पायलेट को ट्रेनिंग करने के लिए हिन्दुस्तान में औसतन 10 से 15 लाख रूपये खर्च होते हैं। आँकड़ों के अनुसार 2020 तक हिन्दुस्तान में लगभग अतिरिक्त 15 हजार पायलेट्स की आवश्यकता होगी। एस0पी0एल0 लाइसेन्स की ट्रेनिंग के लिए मेट्रिक पास और उम्र 16 वर्ष होनी चाहिए। सी0पी0एल0 के लिए 10+2 में फिजिक्स और मैथमैटिक्स के साथ कामयाबी और उम्र 18 से 30 साल, कद कम से कम 5 फिट और वजन 60 कि0 है। एक ट्रेनिंग पायलेट या को पायलेट की तन्ख्वाह लगभग 60–70 हजार रूपये से शुरू होती है और लगभग 2–3 साल में 2 हजार 3 हजार घन्टों की उड़ान के पूरा होने पर वह फ्लाइट कमाँडर बन जाता है। इसके बाद सीनियर कमाँडर के पद पर तरक्की होने पर तन्ख्वाह 4 से 5 लाख रूपये महीने होती है। हैदराबाद, मुम्बई और कलकत्ता के बहुत सारे इंस्टीटूयट में यह कोर्स उपलब्ध है।

(उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ (डाक) 30 नवम्बर 2009 से साभार)

❑❑

समाज-सुधार

# सैलानी की डायरी

मो० हसन अन्सारी

23 नवम्बर 2009 आज शाम अवध यूनीवर्सिटी के बी0ए0 प्रथम वर्ष के एक छात्र से मुलाकात हुई। वह अपने घर पर पढ़ाई कर रहा था। उर्दू विषय की किताब पास में रखी हुई थी जिस के खुले पन्ने पर लिखा था 'गुबारे खातिर – मौलाना अबुल कलाम आजाद' पूछा, इसे पढ़ा। बोला थोड़ा--थोड़ा पढ़ पाता हूं, पूरा नहीं, प्रवाह के साथ लिख भी नहीं पाता, दर असल उर्दू विषय ले तो लिया, मगर दिक्कत हो रही है। अभ्यास का मौका मिलता नहीं हिन्दी की मदद से उर्दू पढ़ने की कोशिश करता हूं। मैंने उसे बताया, 'गुबारे खातिर' मौलाना आजाद के उन खुतूत का मजमूअः (संकलन) है जो उन्होने जेल से अपने दोस्त को लिखे। अक्सर लोग सम्बोधन के शब्द 'सदीके मुकर्रम' को 'सिद्दीक मुकर्रम' पढ़ते हैं जो सही नहीं है। अरबी का शब्द 'सदीक' दोस्त के अर्थ में प्रयोग किया है – 'सदीके मुकर्रम' का मतलब है 'माई डियर फ्रेंड' इतना बता कर मैं ने कहा अब इसे उर्दू में लिखो। वह नहीं लिख पाया। हिन्दी में लिख लिया। मेरे पैर के नीचे की जमीन खिसक गयी!!! उर्दू का यह हाल! यह लोग डिग्री लेकर उर्दू टीचर भी बन सकते हैं, तब यह उर्दू न पढ़ा कर हिन्दी पढ़ायेंगे। क्योंकि बेकार बैठकर तो तनख्वाह लेंगे नहीं। उर्दू के प्रेमी और पक्षधर और इस का दर्द रखने वाले इस सूरते हाल (वस्त–स्थिति) से निबटने के लिय क्या कर रहे हैं या यह कि क्या मंसूबा रखते हैं, कया इस को ऐसे ही चलने दिया जाये? इस की तरफ से आँख फेर कर बेहिस (असंवेदन शील) बने रहने में आफियत है क्या? नहीं! प्रत्येक उर्दू पढ़ा–लिखा सुबूह शाम कुछ तो कर सकता है, और नहीं तो अपने बच्चों को उर्दू पढ़ाना लिखना सिखा सकता है। उर्दू टिचर जो उर्दू के नाम की रोटी खाते हैं उन्हें तो अतिरिक्त समय में कुछ करना ही चाहिये। धरना प्रदर्शन, एहतजाज–शिकायत से तो कुछ बात बनती नजर नहीं आती। जन्नत में जाने के लिये नेकी केसाथ मरना भी पड़ता है।

4 दिसम्बर 2009 लखनऊ जाते हुए आज पाँच–छः घंटे बाराबंकी जिला की हैदरगढ तहसील में राष्ट्रीय राजमार्ग 56 पर, हैदरगढ़ से 19 और लखनऊ से 36 कि0मी0 दूर थोड़ा हट कर उत्तर दिशा में गोमती नदी के दायें तट पर स्थित एक प्राचीन बस्ती जौरास में ठहरना हुआ। जौरास मेरे मित्र मोल्वी मुहम्मद गुफरान नदवी का गाँव है। कहते हें यह बस्ती काफी पुरानी है। जौरास नाम इसलिये पड़ा कि यहाँ कभी जौ की पैदावार ज्यादा होती होगी। बड़ा गाँव है सादात की बस्ती में मौलाना बाकिर साहब फारसी के महान विद्धान गुजरे हैं जिन की यादगार (स्मृति) में नेशनल हाईवे पर गाँव के लिये भव्य प्रवेश द्वार बना है। जौरास की आबादी मिली जुली हैं लोगो में प्रेम और भाईचारा है।

जुमा का दिन। जुमा की नमाज गोमती तट पर गाँव कै किनारे स्थित बहुत पुरानी मस्जिद में पढ़ी। कहते हैं यह मस्जिद सन् 757 हिज्री में बनी। नदी की कगार पर सैकड़ों साल से खड़ी उस की मुख्यधारा का अलिंगन कर रही यह इबादतगाह किसी अजूबे से कम नहीं। कुदरत की निशानी। लाखौरी इंटें। पुरानी साख्त का मसाला। पाँच छः फीट मोटी दीवारें। तीन सुडौल गुम्बद। वास्तुकला तुगलक काल जैसी, मजबूती गजब की। मस्जिद को दरिया में उतर कर अकब (पीछे) से देखना चाहिये। यह एक मुश्किल काम है। बुनियाद की गहराई का सही अन्दाजा नदी की तरफ से आज भी लगाया जा सकता है। यह अच्छी बात है कि इस के जीर्णोद्धार (रेजुविनेशन) और नदी की तरफ से पुश्तः के लिये दीवार बनाने के साथ मीनार की तामीर की शुरूआत की जा चुकी है। काम अधर में है, इसे पूरा करने की तदबीर की जानी चाहिये।

शेष पृष्ठ 15

# दीन व दुनिया का फ़र्क

- एम० हसन अंसारी

- अली मियाँ

"यह दीन जो अल्लाह ने अपने करम से हमको दिया है और जिस की वजह से हम वास्तव में इन्सान कहलाने और दीन व दुनिया की सारी नेअमतों (वरदान) के पात्र हैं। यह दीन न कोरी कल्पना पर आधिरित है न इच्छाओं पर। लेकिन इस से पहले यह समझ लीजिये कि दीन व दुनिया का फ़र्क क्या है? दुनिया वह है जो आदमी अपनी कल्पना, सोच व अन्दाजे अपनी बुद्धि व अनुभव अथवा अपने अन्दर के तकाजे से बरतता है। दीन व दुनिया को जो चीज अलग करती है वह यह है कि दुनिया सरासर अनुमान और इच्छा पर आधारित है और दीन सरसर ईश–वाणी (वही) और अल्लाह के हुकम पर आधारित है। दुनिया में मन के सन्तोष, लोगों के कहने सुनने या जो कुछ इन्सान को हासिल होता है अथवा किसी चीज को करने से जो इस की प्रतिक्रिया होती है और इस पर जो फायदा या नुकसान बनता है उस पर उस की नजर होती है और दीन में अल्लाह की रजा (इच्छा) पसन्द और अल्लाह के हुकम पर उस की नजर होती है और आज्ञापालन की भावना काम करती है यह एक बहुत मोटी सी बात है लेकिन बहुत से लोगों ने इस पर विचार नहीं किया कि दीन व दुनिया का फर्क क्या है? क्या चीज है जो किसी चीज को दुनिया बनाती है और क्या चीज है जो किसी चीज को दीन बनाती है, शारीरिक हैसियत से सब इन्सान हैं, सब समझदार प्राणी हैं,सब जिस्म नामी हैं लेकिन जो चीज इन्सान और इन्सान में फर्क करती है और किसी को प्रतिष्ठा प्रदान करती है और जो किसी को गर्त में ढकेल देती है वह चीज यह है कि उस का स्रोत और मकसद क्या है? अगर इस को हम समझ लें तो सारी किताबों के अन्दर जो ज्ञान है सिमट कर इस एक बिन्दु के अन्दर आ जाये। दीन वह है जिस के अन्दर आत्मा बन्दगी की हो और दुनिया वह है जिस के अन्दर आत्मा अपनी किसी भावना की तुष्टि (तस्कीन) की हो या उस का मकसद किसी दुनियावी (साँसारिक) मकसद की प्राप्ति हो जैसा कि बुखारी शरीफ की पहली हदीस में आया है :

दुनिया यह है कि आदमी कोई ऐसा काम करे जिस का स्रोत कोई साँसारिक लाभ और मन की किसी भावना की तुष्टि हो। कुर्आन में आता है, तर्जमः "भला तुम ने उस को भी देखा जिसने अपना पूज्य किस को बनाया? अपनी कामवासना को बनाया।" और इस की उत्कृष्ट व्याख्या अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल0 ने इन शब्दों में की, तर्जमः "तुम में से कोई व्यक्ति मोमिन (ट्रूबिलीवर) नहीं हो सकता जब तक उस की कामवासन ताबे न हो जाये उस के जो मैं लेकर आया हूं, जब तक उसकी कामवासना उस हुक्मे इलाही के ताबे न हो जाये जिस का जरियः मैं हूं, उस वक्त तक उसका ईमान मुकम्मल (परिपूर्ण) नहीं हो सकता।" जो चीज दोनों को जुदा करने वाली है वह यह है कि यह सब भावनाये हुकमे इलाही ओर उस की मंशा के मातहत (अधीन) हो जायें। और यह उन पर हावी हो जाये।"

□□

# गवर्नर का अभिमानी पुत्र

- खुर्रम मुराद

हज़रत उमर (रज़ि0) एक दिन मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक मिस्री आया और रीति के अनुसार उन्हें सलाम किया "अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो)।" हज़रत उमर (रज़ि0) ने इसके जवाब में कहा, "व अलैकुमुस्सलाम (और तुम पर भी सलामती हो)।" फिर वह अजनबी व्यक्ति हज़रत उमर (रज़ि0) के बगल में बैठ गया और उन्हं संबोधित करते हुए कहा, "यदि मैं आपके समक्ष अपना मुकदमा पेश करूं, तो क्या मैं यकीन कर सकता हूं कि मेरे साथ न्याय होगा और मुझे सुरक्षा प्राप्त होगी?"

हज़रत उमर (रज़ि0) ने जवाब दिया "हाँ, मैं वादा करता हूं कि तुम्हारे साथ न्याय किया जाएगा और तुम्हें सुरक्षा भी प्राप्त होगी। लेकिन अब मुझे बताओ कि तुम्हें परेशानी क्या है?"

मिस्री ने कहना शुरू किया, "मिस्र में आपके गवर्नर उमर बिन आस के मन में घुड़दौड़ कराने का विचार आया। आप जानते ही हैं कि हम मिस्री लोग घोड़ों से कितना प्यार करते हैं, और अरब की तरह हममें से बहुतों के पास बेहतरीन नस्ल के घोड़े हैं, और हममें से हर एक व्यक्ति घुड़दौड़ में अपने घोड़े को शामिल करने के लिए उत्सुक था। इस अद्‌भुत और अतिविशिष्ट आयोजन की तैयारी में कई दिन लग गये। स्वयं मेरे पास एक बहुत सुन्दर और शक्तिशाली घोड़ी थी। मैंने भी इस दौड़ में हिस्सा लिया, जिसमें मुझे जीतने की पूरी आशा थी, "तभी, अम्र का बेटा, मोहम्मद भी इस प्रतियोगिता में अपने घोड़े के साथ शामिल हुआ। फिर घुड़दौड़ शुरू हुई और हर बार सभी घोड़े निरंतर मेरी घोड़ी से आगे रहे। मैंने ठीक से यह देखना चाहा कि कौन–सा घोड़ा आगे बढ़ता है। मैंने पाया कि मेरी घोड़ी जो कि शुरू में पिछड़ रही थी, बड़ी तेजी के साथ अन्य घोड़ों के बराबर में आ गयी और यही नहीं दूसरे फेरे में वह अन्य घोड़ों को पीछे छोड़ गयी। तीसरे फेरे में जब घोड़े उस जगह से गुजरे जहाँ मुहम्मद बैठा हुआ था, तो उसी समय मैंने उसे जोर से चिल्लाते हुए सुना 'मेरा घोड़ा सबसे आगे हैं। मेरा घोड़ा जीत रहा है।"

कुछ क्षण बाद घोड़े मेरे पास से गुजरे और मैंने साफ–साफ देखा कि अग्रगामी घोड़ा मुहम्मद का कदापि नहीं था, बल्कि मेरी घोड़ी थी, जो जीत रही थी। आप सोच सकते हैं कि मैं कितना रोमांचित हुआ हूंगा। मैं खुशी से उछल पड़ा और घोड़ी को थपथपाने लगा। काबा के रब की कसम, वह मेरी घोड़ी थी, जो सबसे आगे बढ़ रही थी। अचानक मुहम्मद बिना खबरदार किये मेरे पास चाबुक लेकर आया और पूरी शक्ति से मुझे मारने लगा। "ऐ अभद्र ले। ऐ अभद्र, ले। याद रख, मैं एक प्रतिष्ठत व्यक्ति का बेटा हूं, जबकि तू बस नीच है।'

"ऐ अमीरुल मोमिनीन, आप कल्पना कर सकते हैं कि फिर मेरे ऊपर क्या बीती होगी? मुझे जेल में डाल दिया गया... और इस घटना के विषय में अम्र (रज़ि0) को पता चल गया था और उन्हें भय था कि मैं आपके पास पहुँचकर सुरक्षा प्राप्त करूंगा और उनके बेटे की गिरी हुई हरकत के सिलसिले में शिकायत करूंगा। अतः मुझे जेल में डाल दिया गया और यदि पहरेदारों में से एक पहरेदार मुझ पर मेहरबान न हो जाता, जिसने मेरी पूरी कहानी सुन रखी थी, तो मैं कदापि आपके पास मदद माँगने के लिए हाजिर न हो सकता।"

इस कहानी को सुनकर हज़रत उमर (रज़ि0) पर खामोशी छा गयी। बस वे इतना बोल सके, "बैठ जाओ, मेरे भाई। हमारे पास ठहरो।" फिर हज़रत उमर (रज़ि0) ने मिस्र के गवर्नर को आदेश देते हुए एक पत्र लिख कि तुरंत अपने बेटे मुहम्मद के साथ मदीना आओ। वह मिस्री व्यक्ति उन लोगों के मदीना आने तक वही ठहरा रहा।

जब अम्र को पत्र मिला, तो वे चिंतित हो उठे। उन्होंने अपने बेटे को बुलाया और पूछा, "तुमने क्या किया? क्या तुमसे अपराध हुआ है?

युवक ने उत्तर दिया, "नहीं मैं कसम खाकर कहता हूं।"

"फिर हज़रत उमर (रज़ि0) को हम दोनों की क्या जरूरत?" तुमने अवश्य ही कुछ किया होगा।" अम्र (रज़ि0) ने अपने बेटे की एक उंगली पकड़ते हुए कहा।

एक लंबी यात्रा के बाद हज़रत अम्र और मुहम्मद मदीना में मस्जिद नबवी पहुँचे। यह सुनकर कि हज़रत अम्र (रज़ि0) गुजर रहे हैं, भीड़ जमा हो गयी और लोग खुशी और उल्लास व्यक्त करने लगे। अम्र (रज़ि0) अपनी दैनिक शानदार पोशाक पहने हुए थे और उनका अभिमानी नवजवान पुत्र उनके पीछे–पीछे चल रहा था।

हज़रत उमर (रज़ि0) ने औपचारिकताएं निभाने में समय नष्ट नहीं किया। उन्होंने अकस्मात पूछा, "कहाँ है तुम्हारा बेटा?" इस पर मुहम्मद अम्र के लंबे लबादे की आड़ से निकलकर सामने आया।

"मिस्री व्यक्ति कहाँ है?"

"मैं यहाँ हूं अमीरुल मोमिनीन।"

हज़रत उमर (रज़ि0) ने उसे कोड़ा देते हुए कहा, "मिस्री, अब इस प्रतिष्ठित व्यक्ति के युवा बेटे को उसी तरह कोड़े मारो, जिस तरह उसने तुम्हें मारा है।"

मिस्री ने अपने हाथ में कोड़ा लिया और कई सख्त कोड़े लगाए। हज़रत उमर (रज़ि0) ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाया और कहा, "अच्छा है... कोड़े लागाओ प्रतिष्ठित व्यक्ति के इस बेटे को।"

कुछ क्षण के बाद मिस्री कोड़ा मारना बन्द किया। अम्र (रज़ि0) का बेटा बहुत अपमानित हुआ और चोट की पीड़ा उसे अलग हो रही थी। वह भाग कर भीड़ के पीछे निकल गया।

हज़रत उमर (रज़ि0) ने अम्र पर तीखी नजर डालते हुए कहा, "और यदि ऐसे गवर्नर को कुछ थोड़े से कोड़े लगा दिए जाएं तो कैसा रहेगा, जिसकी सत्ता और हुक्मरानी के कारण उसके इस बेटे के अन्दर ऐसा दुस्साहस पैदा हुआ कि वह अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगा।"

यह सुनकर अम्र का चेहरा पीला पड़ गया और लोग स्तब्ध रह गये। लेकिन मिस्री व्यक्ति ने अपन सिर हिलाते हुए कहा, "अमीरु मोमिनीन! मैंने अपना बदला ले लिया है। अम्र ने स्वयं मेरे विरुद्ध कोई काम नहीं किया है।"

हज़रत उमर (रज़ि0) ने कहा, "बहुत अच्छा, यदि तुम गवर्नर को भी कोड़े मारना चाहते, तो इसकी भी मैं तुम्हें अनुमति दे देता और मैं तुम्हें कदापि न रोकता।"

फिर अम्र की ओर रुख करते हुए कहा, "लोगों को उनकी माताओं ने स्वतंत्र जन्म दिया था, तुम कब से उन्हें अपना दास बनाने लगे।"

अम्र ने स्वीकृति भाव में सिर हिलाया और क्षमा–याचना के कुछ शब्द कहे। हज़रत उमर (रज़ि0) ने फिर मिस्री व्यक्ति की ओर रुख किया और कहा, "अपने देश को वापस जाओ और आराम और चैन से रहो। यदि तुम्हारे साथ फिर कभी कोई अनुचित व्यवहार किया जाता है, तो तुम मुझे खबर करने में कदापि न हिचकिचाना।"

उस मिस्री ने हज़रत उमर (रज़ि0) को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। उपस्थित लोग खलीफा से यह सबक लेकर अपने–अपने घरों को वापस हो गये कि कानून की दृष्टि में सब बराबर हैं।

(कान्ति से गृहीत)

❑❑

## अच्छी सीख

रब ने मुझ को दी तौफ़ीक़
बोलूँ गा मैं अच्छी सीख
नबी हैं तुम से बहुत क़रीब
औला तर अज़ जाने अज़ीज़
रब ने बनाया उन्हें रऊफ़
वो हैं हम पर बड़े रहीम
सबक़ तुम उन का सुन लो आज
हुब्बे नबी बिन नहीं नजात
जिस को नबी से उलफ़त है
रस्ता उस का सुन्नत है
दूर हुआ जो सुन्नत से
दूर है रब की रहमत से

❑❑

# मंदबुद्धि बीमारी नहीं

डॉ०ए०के० अरुण

मानसिक रूप से विकलाँग या मंदबुद्धि होना बीमारी नहीं, अपितु एक अवस्था है। कोई भी बच्चा जन्म से ही मंदबुद्धि का हो सकता है। कुछ स्थितियों में बच्चा जन्म से पहले या जन्म के तुरंत बाद भी मंदबुद्धि हो कसता है। कभी–कभी तो किसी दुर्घटना या गंभीर बीमारी की चपेट में आने पर भी मानसिक शिथिलता हो सकती है।

कभी–कभी कुछ कारणें से बच्चों का मानसिक एवं शारीरिक विकास शिथिल हो जाता हे। ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों की तुलना में धीमी गति से बढ़ते हैं। उनकी क्रियाएं धीमी हो जाती हैं और वे कुछ असामान्य दिखते हैं। ऐसे में अक्सर माता–पिता इसको कोई बीमारी मान बैठते हैं। चिकित्सकों से अकसर यह प्रश्न किया जाता है कि क्या मंदबुद्धि बच्चों का इलाज कर उन्हें ठीक किया जा सकता है? चूंकि यह काई बीमारी नहीं है, अतः इसका इस तरह से इलाज नहीं होता। इसके लिए तो बच्चों का खास ध्यान रखने की जरूरत होती है।

आमतौर पर देखा जाता है कि कुछ गैर–जिम्मेदार व तथाकथित चिकित्सक मंदबुद्धि बच्चों को ठीक कर देने के नाम पर उनके माता–पिता या अभिभावक से हजारों रुपये ऐंठ लेते हैं। कभी–कभी तो झाड़–फूंक वाले ही तंत्र–मंत्र के नाम पर लूट करते हैं। यदि कोई बच्चा मंदबुद्धि का है तो उसके लिए जरूरी है कि उसके खान–पान, रहन–सहन आदि का पूरा ख्याल रखा जाए।

मंदबुद्धि बच्चे आम बच्चों से काफी भिन्न होते हैं। ऐसे बच्चे बेशक शारीरिक रूप से बडे हो जाएं लेकिन मानसिक या दिमागी तौर पर ये अविकसित ही होते हैं। मनोवैज्ञानिक व मानसिक रोग विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे बच्चों पर यदि पर्याप्त ध्यान दिया जाएं, उचित प्रशिक्षण दिया जाए व देखभाल की जाए तो उनकी अवस्था में सुधार हो सकता है। कभी–कभी जो गहन प्रशिक्षण के कारण ही मंदबुद्धि बच्चे सामान्य बच्चें की तरह ठीक लगने लगते हैं। कहते हैं कि बाल्यावस्था में ही मंदबुद्धि बच्चों को दिया गया प्रशिक्षण महत्वपूण्र होता है।

प्रत्येक वर्ष 8 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर मंदबुद्धि बच्चों का दिवस मनाया जाता है। इस विशेष दिवस का महत्व यह है कि आम लोगों में बच्चों के प्रति जागरूकता और सम्मान की भावना विकसित हो। अक्सर देखा जाता है कि बच्चों के माता–पिता अपने सामान्य बच्चों को किसी मंदबुद्धि बच्चे के साथ रहने या खेलने देने से मना करते हैं। मानसिक शिथिलता कोई फैलने वाला रोग तो है नहीं। मंदबुद्धि बच्चों के प्रति सहानुभूति और अच्छा व्यवहार तो हमारे नैतिक और सामाजिक दायित्व हैं। ऐसे बच्चों को तो पर्याप्त स्नेह मिलना चाहिए और देखभाल होनी चाहिए।

ग्रामों या शहरों में अनेक लोग यह सोचते हैं कि मंदबुद्धि बच्चों का यदि शीघ्र विवाह कर दिया जाए तो वे ठीक हो सकते है, यह धारणा ठीक नहीं। माकनसिक रूप से कम विकसित होने के कारण मंदबुद्धि युवाओं का कम उम्र में ही विवाह कर देना ठीक नहीं है। ऐसे में मंदबुद्धि व्यक्ति/युवाओं पर पारविारिक जिम्मेदारी का अतिरिक्त बोझ लादना नैतिक भी नहीं है।

सामान्यतया बच्चों का विकास नियमित क्रम से होता है। उनके विकास का मानदंड निधारित होता है, लेकिन मंदबुद्धि बच्चों में यह प्रक्रिया धीमी पड़ जाती है। यह दी गयी तालिका से समझा जा सकता है कि विभिन्न अवस्था में सामान्य तौर पर होने वाली बातें मंदबुद्धि बच्चो में कितनी देर से होती है।

यदि आपका बच्चा आपकी तरफ ध्यान न दे, किसी चीज को देर से समझे, हमेशा सुस्त रहे, चिडचिड़ा रहे, आम बच्चों से अलग दिखे, किसी भी वस्तु पर ज्यादा देर

| अवस्था | सामान्य बातें | मंदबुद्धि बच्चों में देर से होने वाली बातें |
|---|---|---|
| 1–3 महीना | अपनी माँ को पहचानना | चौथा महीना |
| 1–4 महीना | मुस्कुराना | छठा महीना |
| 4–5 महीना | इधर–उधर लेटना | छठा महीना |
| 5–10 महीना | बिना सहारे बैठना | बारहवाँ महीना |
| 9–14 महीना | बिना सहारे खड़ा होना | अठारहवाँ महीना |
| 10–20 महीना | इधर–उधर टहलना | बीसवाँ महीना |
| 10–12 महीना | माँ–पा आदि बोलना | तीसरा साल |
| 2–3 साल | स्वयं खाना–पीना दूसरों का नाम बताना | चौथा साल |

तक ध्यान न दे तो भी अपने चिकित्सक से राय लेनी चाहिए। ऐसे बच्चे या तो मंदबुद्धि या किसी तत्तव की कमी के शिकार हो सकते हैं। चिकित्सकों से सलाह के अनुसार ही बच्चो की विशेष देखभाल की जानी चाहिए।

वालेंटरी हेल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने अपनी स्वास्थ्य शिक्षण संबंधी पुस्तिका में एक सलाह प्रकाशित की है। उनके अनुसार अपने बच्चे के मानसिक रूप से पिछड़ेपन और जन्म के साथ ही होने वाले दोषों को रोकने के लिए महिलाओं को निम्न सुझाव मानने चाहिए।

- गर्भावस्था के दौरान अच्छे से अच्छा आहार लें। ध्यान रहे कि हरी सब्जियाँ, फल, दालें व अनाज भरपूर हो।
- गर्भावस्था में खासकर सामान्य नमक की जगह आयोडाइज्ड नमक का ही प्रयोग करें।
- धूम्रपान या शराब के सेवन से बचें।
- गर्भावस्था में जानी–परखी गयी सुरक्षित दवाओं के अलावा दूसरी दवाओ का अनावश्यक प्रयोग न करें।
- नर्स या दाई को प्रस से पूर्व "आक्सीटोन" का टीका न लगाने दें।
- यदि बच्चे को पीलिया हो तो तुरंत चिकित्सक से सलाह लें।

इन बिन्दुओं पर ध्यान देने से अधिकाँश मामलों में बच्चों के मंदबुद्धि या मानसिक रूप से शिथिल होने कि संभावनाओं को रोका जा सकता है।

देश के कई शहरों एवं ग्रामों में मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों के लिए अनेकों केन्द्र सक्रिय हैं। आमतौर पर मंदबुद्धि की विभिन्न अवस्थाएं–ऑटिज्म, डाउंस सिंड्रोम, माइक्रोसेफाली, सेरेब्रल पालसी, हाइड्रोसिफेल्स आदि से पीड़ित बच्चों का तो इलाजा भी संभव है।

होम्योपैथी : होमियोपैथी तो इन अवस्थाओं में बेहद कारगर सिद्ध हो सकती है। केरल के कोटटायम में भारत के ख्यात होमियोपैथिक चिकित्सक डॉ0आर0पी0 पटेल व दर्जनों अन्य होम्योपैथ ने तो ऐसे कई सफल इलाज किये भी हैं।

होमियोपैथिक दवाओं का नाम लें तो हाइड्रोसिफेल्स की स्थिति में मुख्य रूप से एपीस मेल, एपोसाइनम, आजन्टम नाइट्रीकम, कैलकेरिया फॉस, क्यूप्रम एसेटिकम, जेल्सेमियम, हेलीबोरस, आयोडोफार्म, साइलिसीया, जिंकम मेटालिकम आदि दवाएं महत्वपूण हैं।

मदंबुद्धि बच्चों के दूसरे शारीरिक संताप की अवस्थाओं में भी शरीरिक लक्षणों के आधार पर होमियोपैथिक दवाओं का प्रयोग कई प्रकार से लाभदायक हैं चूंकि होमियोपैथिक दवाँए शरीर की शरीरिक अवस्थाओं के साथ–साथ मानसिक अवस्थाओं को प्रभावित करती है।

❑❑

## सलाम

**सलाम उस पर कि जिस का जिक्र है सारे सहाइफ में**

**सलाम उस पर हुआ मजरुह जो बाजारे ताइफ में**

**सलाम उस पर वतन के लोग जिस को तंग करते थे**

**सलाम उस पर कि घर वाले भी जिस से जंग करते थे**

**सलाम उस पर कि जिस ने खूं के प्यासों को कबाएं दीं**

**सलाम उस पर कि जिसने गालियाँ सुन कर दुआएं दीं।**

❑❑

# भारत का संक्षिप्त इतिहास

# मुगल काल

पिछले अंक से आगे.....

— इदारा

**कठिनाइयों का निवारण**— यद्यपि अकबर की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ बड़ी भयानक थीं, परन्तु उसके संरक्षक बैरम खाँ में उनका सामना करने की पूर्ण क्षमता थी। उसने प्रारम्भ से ही बड़ी सतर्कता तथा सावधानी के साथ काम करना आरम्भ किया। सबसे पहले उसने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को समाप्त करने का निश्चय किया।

**1. शाह अबुल मआली के विरुद्ध कार्यवाही**— बैरम खाँ को सबसे बड़ा खतरा शाह अबुल मआली की ओर से था। मआली बड़ा ही रूपवान तथा गुणवान नवयुवक था। वह बड़े ही प्रतिष्ठित सैयद वंश में उत्पन्न हुआ था। हुमायूं का वह बड़ा प्रिय बन गया था और मुगल दरबार में उसका बड़ा मान सम्मान तथा प्रभाव था। शिया लोगों से उसे घोर घृणा थी और बैरम खाँ का उत्थान उसकी आखों में खटक रहा था। बैरम खाँ तुरन्त ताड़ गया कि यह व्यक्ति बड़ा खतरनाक सिद्ध हो सकता है। अतएव उसने उसको समाप्त कर देने का निश्चय कर लिया। एक दिन सम्राट के राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में एक प्रीतिभोज दिया गया। वहीं पर बैरम खाँ ने मआली को कैद कर लिया और उसे लाहौर भेज दिया गया। इस प्रकार शाही शिविर में अब किसी प्रकार के षड्यंत्र की सम्भावना न रही।

**2. हेमू के साथ संघर्ष**— शाही शिविर में सुरक्षा की पूरी व्यवस्था करने के बाद बैरम खाँ ने दिल्ली की ओर ध्यान दिया, जहाँ से बड़ी आपत्तिजनक खबरें आ रही थीं। मुहम्मद शाह सूर का सेनापति हेमू बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था। बैरम खाँ ने अपने सबसे अधिक योग्य सेनापति पीर मुहम्मद शेर्वानी को कुछ अन्य लोगों के साथ तार्दी बेग को ढ़ारस देने के लिए दिल्ली भेज दिया। तार्दी बेग भी चुप न बैठा था। उसने दिल्ली तथा आगरे के सभी प्रान्तीय गवर्नरों को बुला भेजा था, जो ठीक समय पर दिल्ली आ गये। हेमू भी अपनी सेना के साथ दिल्ली के समीप आ डटा। मुगल तथा अफगान सेनाओं में भीषण संग्राम आरम्भ हो गया। पहले तो मुगलों को कुछ सफलता मिली, परन्तु बाद में हारने लगे। पीर मुहम्मद लड़ाई के मैदान से भाग खड़ा हुआ। यह देखकर तार्दी वेग भी हताश हो गया और वह भी पलायन कर गया।

जब यह लोग भाग कर शाही सेना में पहुँचे तो बैरम खाँ को बड़ी चिन्ता हुई। उसने तार्दी बेग को अपने खेमे में बुलवाया और उसका वध करवा दिया। इस वयोवृद्ध तुर्की अमीर की हत्या से तुर्की अमीरों में बड़ी सनसनी फैल गई और वे बैरम खाँ को बड़े सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। परन्तु इस संकट काल में सभी अमीर संगठित रहे और यह निश्चित किया गया कि किसी योग्य व्यक्ति को सिकन्दर शाह पर कड़ी निगाह रखने के लिए छोड़ दिया जाय और प्रधान शाही सेना दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दे।

फलतः शाही सेना बड़ी तेजी के साथ दिल्ली की ओर बढ़ी। अली कुली खाँ उपवेग को, जो बड़ा ही वीर सैनिक तथा कुशल सेनापति था, दस हजार अश्वारोहियों के साथ आगे भेज दिया गया। संयोगवश अली कुली हेमू के तोपखाने के पास पहुँच गया, जिसकी सुरक्षा की समुचित व्यवस्था वह न कर सका था। फलतः बड़ी आसानी से मुगलों ने हेमू के तोपखाने को छीन लिया। यह हेमू की बहुत बड़ी गलती थी कि अपने तोपखाने को सुरक्षा की समुचित व्यवस्था किये बिना ही उसे आगे भेज दिया था। परन्तु दुर्घटना से हेमू का साहस भंग न हुआ और वह अपनी सेना के साथ पानीपत के मैदान में आ डटा। इस प्रकार अपने भाग्य का निर्णय करने के लिए अफगानों तथा मुगलों में पानीपत का दूसरा युद्ध आरम्भ हो गया।

5 नवम्बर 1556 ई0 को हेमू की सेना का मुगल सेना के साथ भीषण संग्राम आरम्भ हो गया। हेमू

की सेना में बड़ा उत्साह था और वह बड़ी वीरता से लड़ रही थी। धीरे धीरे हेमू की सेना को सफलता मिलने लगी और मुगलों के पैर उखड़ने वाले ही थे कि दुर्भाग्यवश हेमू की आँख में एक तीर लगा और वह बेहोश होकर अपने हाथी के हौदे में गिर पड़ा। परन्तु यह खबर फैल गई कि हेमू मर गया। फलतः उसकी सेना में भगदड़ मच गई। हेमू पकड़ लिया गया और बादशाह अकबर के सामने लाया गया। बैरम खाँ ने बादशाह से यह प्रार्थना की कि वह अपनी तलवार से हेमू का सिर उड़ा दे। परन्तु बादशाह ने मरते हुए आदमी पर तलवार उठाना उचित न समझा। अतएव बैरम खाँन ने अपनी तलवार से हेमू के सिर को उसके धड़ से अलग कर दिया। इस प्रकार हेमू की जीवन लीला समाप्त हो गई।

हेमू का असली नाम हेमराज था। वह धूसर जाति का था, जो गौड़ ब्राहमणों की शाखा है। परन्तु वह रेवाड़ी में शोरे का व्यापार करता था। इसी से कुछ इतिहाकारों ने उसे बनिया कहा है। हेमू बड़ा ही प्रतिभावान व्यक्ति था, अतएव सुल्तान इस्लाम शाह का ध्यान उसने आकृष्ट कर लिया, जिसने उसे बाजारों का निरीक्षक बना दिया। अपनी प्रतिभा के बल से हेमू उन्नति करता गया। कुछ दिनों तक उसने शाही रसोई के निरीक्षक के पद पर काम किया। वह सैनिकों को रसद भी दिया करता था। अपनी प्रतिभा के बल से वह लगान का छोटा सा अफसर बन गया। बाद में अफगान सेना में उसे एक छोटा सा पद मिल गया। इस्लाम शाह की मृत्यु के उपरान्त अपने गुणों से उसने सुल्तान आदिल शाह को मुग्ध कर लिया और वह उसका प्रधान मन्त्री तथा उसकी सेना का प्रधान सेनापति बन गया। हिन्दू होते हुए भी वह अपने स्वामी का बड़ा विश्वासपात्र तथा अफगान सैनिकों का बड़ा प्रिय बन गया। अफगान सरदार उसे बड़े आदर की दृष्टि से देखते थे और प्राण प्राण से उसकी अध्यक्षता में लड़ने के लिए तैयार रहते थे। अपने स्वामी के लिए चुनार से दिल्ली तक उसने बाईस युद्ध किये, परन्तु किसी में भी वह परास्त न हुआ वरन् सर्वत्र उसने विजय का ही आलिंगन किया। परन्तु पानीपत के द्वितीय युद्ध में भाग्य ने उसका साथ न दिया और वह परास्त हो गया। उसकी पराजय के दो महान कारण थे। पहला कारण उसके तोपखाने का छिन जाना और दूसरा कारण उसकी आँख में सहसा तीर लग जाना था। इस प्रकार हेमू की पराजय संयोगवश और अकबर की विजय सौभाग्यवश हुई।

पानीपत के दूसरे युद्ध में हेमू की पराजय का भारतीय इतिहास पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। अकबर की इस विजय से दिल्ली तथा आगरे पर सुदृढ़तापूर्वक मुगलों की सत्ता स्थापित हो गई और उसके लिए भारत की विजय का मार्ग साफ हो गया। हेमू की पराजय ने आदिलशाह के भाग्य का सदैव के लिए निर्णय कर दिया। बंगाल के शासक खिज्र खाँ ने उस पर आक्रमण कर उसकी हत्या कर दी। आदिलशाह की मृत्यु से मुगल सेना का रास्ता साफ हो गया, जो अली कुली की अध्यक्षता में आगे बढ़ी।

**3. सिकन्दर सूर के साथ संघर्ष**– दिल्ली तथा आगरे पर सुदृढ़तापूर्वक अपना अधिकार स्थापित कर लेने के बाद बैरम खाँ ने बादशाह के साथ सिकन्दर सूर का सामना करने के लिए प्रस्थान कर दिया। अवसर पाकर सिकन्दर सूर शिवालिक की पहाड़ियों से निकल आया था और पंजाब में लगान वसूल करने लगा था। जब उसे शाही सेना के आने की सूचना मिली तब उसने मानकोट के दुर्ग में अपने को बन्द कर लिया। मुगलों ने दुर्ग का घेरा डाल दिया जो 6 महीने तक चलता रहा। अन्त में सिकन्दर सूर निराश हो गया और सन्धि की बातचीत आरम्भ कर दी। सिकन्दर इस शर्त पर आत्म समर्पण करने के लिए उद्यत हो गया कि बिहार में उसे कोई जागीर दे दी जाय। उसकी यह शर्त स्वीकार कर ली गई। फलतः 24 मई, 1557 ई0 को उसने मानकोट का दुर्ग मुगलों को समर्पित कर दिया और स्वयं बिहार चला गया, जहाँ कुछ दिनों के बाद उसका परलोकवास हो गया।

**4. काबुल की समस्या का समाधान**– जिस प्रकार आपदा अकेली नहीं आती उसी प्रकार

सफलता भी संगिनी के साथ आती है। अब सफलता अकबर की अनुगामिनी बन गई। काबुल में भी परिस्थितियाँ अकबर के अनुकूल हो गईं। सुलेमान मिर्जा कई महीने तक काबुल का घेरा डाले रहा, परन्तु उसे न ले सका। इसी बीच में उसे यह सूचना मिली कि उजबेग लोग मध्य एशिया से चल पड़े हैं और दिल्ली से मुगल सेनाएं काबुल की रक्षा के लिए आ रही हैं जाड़े की ऋतु भी समीप आ रही थी और बर्फ गिर जाने पर उसका लौटना कठिन हो जाता। अतएव उसने काबुल का घेरा उठा लिया और बदख्शाँ चला गया। इस प्रकार काबुल मुक्त हो गया और अकबर की एक और कठिनाई से छुटकारा मिल गया परन्तु कन्धार अकबर के हाथ से निकल गया और उस पर फारस के शाह ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

**5. संरक्षक के साथ संघर्ष**– बैरमखाँ ने अपने चार वर्षों के शासन–काल में बादशाह को न केवल उसकी सभी प्रारम्भिक कठिनाइयों से मुक्त कर दिया और उसकी स्थिति को अत्यन्त सुदृढ़ बना दिया वरन् उसके राज्य के विस्तार में भी वृद्धि कर दी और काबुल से जौनपुर तथा काश्मीर से अजमेर तक अकबर की प्रभुत्वशक्ति पूर्णरूप से स्थापित हो गई। ग्वालियर जीत लिया गया और रणथम्भौर तथा मालवा को नत–मस्तक करने का पूरा प्रयत्न किया। इस प्रकार अत्यन्त संकट–कला में बैरम खाँ ने सम्राट की बड़ी सराहनीय सेवाइएं कीं परन्तमु कई कारणों से बैरम खाँ के विरुद्ध षड्यन्त्रकारियों में सबसे बड़ा हाथ तुर्की अमीरों तथा बादशाह की धायतों और अन्तःपुर की महिलाओं का था। इनकी सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि प्रधान–मंत्री उनको उपेक्षा करता था और उन्हें खर्च के लिये पर्याप्त धन नहीं मिलता था। बैरम खाँ ने एक भूल यह की थी कि वह शिया मुसलमानों के साथ पक्षपात किया करता था और राज्य में उन्हें ऊँचे–ऊँचे पद दिया करता था। इससे सुन्नी अमीर बड़े असन्तुष्ट हो गये और प्रधानमंत्री के विरुद्ध सम्राट के कान भरने लगे। सम्राट की अवस्था सत्तरह–अट्ठारह वर्ष की हो चुकी थी और अब वह संरक्षक के नियन्त्रण से मुक्त होकर शासन की बागडोर को अपने हाथ में लेने के लिए आतुर हो गया था। फलतः बैरम खाँ की सत्ता को समाप्त करने के लिए सम्राट तथा तुर्की अमीरों में गठबन्धन हो गया। उसी समय बैरम खाँ ने पीर मुहम्मद खाँ को पदच्युत करके उसे निर्वासित कर दिया और उसके स्थान पर एक ईरानी को नियुक्त कर दिया। इससे तुर्की सुन्नी अमीरों में खलबली मच गई और उन लोगों ने सम्राट के कान भरे। सम्राट ने बैरम खाँ के इस कार्य पर असन्तोष प्रकट किया, क्योंकि पदच्युत तथा नियुक्त करने का एकमात्र अधिकार सम्राट को ही है। अब अकबर ने बैरम खाँ को पदच्युत करने का निश्चय कर लिया।

18 मार्च 1560 ई0 को सम्राट ने आखेट के बहाने आगरे से दिल्ली के लिए प्रस्थान कर लिया। 27 मार्च को सम्राट् दिल्ली पहुँच गया और वहाँ से उसने एक फर्मान निकाल कर बैरम खाँ को पदच्युत कर दिया और शासन की बागडोर को अपने हाथ में ले लीं जब बैरम खाँ को इसकी सूचना मिली तो वह आश्चर्यचकित हो गया और सम्राट से मिलना चाहा, परन्तु सम्राट ने उससे मिलने से इन्कार कर दिया। विवश होकर बैरम खाँ ने विद्रोह कर दिया। वह बीकानेर से पंजाब चला गया, जहाँ पर शाही सेना के साथ उसका संघर्ष हुआ। बैरम खाँ परास्त हो गया और शिवालिक की पहाड़ियों में भाग गया, परन्तु अकबर ने स्वयं उसका पीछा किया। निराश हो कर अक्टूबर 1560 ई0 में बैरम खाँ ने आत्मसमर्पण कर दिया। बैरम खाँ ने साम्राज्य तथा राज–परिवार की अनन्य भक्ति के साथ जो सेवाएं की थीं वे सम्राट् के हृदय–पटल पर विद्यमान थीं। सम्राट ने बड़े सम्मान के साथ अपने राजसी वस्त्र से पुरस्कृत किया। इस सद्व्यवहार से बैरम खाँ के हृदय में कृतज्ञता की अपार धारा प्रवाहित हो चली, जो उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह उसके कपोलों को सिंचित करती हुई उसके हृदय की ज्वाला को शान्त करने

लगीं फरिश्ता के कथनानुसार सम्राट ने बैरम खाँ के सामने तीन प्रस्ताव रखे अर्थात् वह कालपी तथा चन्देरी की सूबेदारी पा सकता था अथवा दरबार में सम्मानपूर्वक रह सकता था या मक्का की यात्रा कर सकता था जिसके लिए धन तथा संरक्षकों से उसकी सहायता की जायगी। प्रथम दो प्रस्ताव बैरम खाँ को मान्य न हुए, क्योंकि वह प्रधानमंत्री के पद पर और साम्राज्य का सर्वेसर्वा रह चुका था। अतएवं अब निम्न–पद का स्वीकार करना उसके आत्मसम्मान के विरुद्ध था। फलतः बैरम खाँ ने सम्राट के तीसरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और मक्का जाने का निश्चय कर लिय। अकबर ने उसकी सुरक्षा की पूरी व्यवस्था कर दी, परन्तु मक्का पहुँचना बैरम खाँ के भाग्य में न लिखा था। जब वह गुजरात कें पतन नामक स्थान पर जहुँचा तब 31 जनवरी 1561 ई0 को मुबारक खाँ लोहानी नामक एक अफगान ने जिसके पिता की बैरम खाँ ने हत्या की थी अपने कुछ साथियों के साथ बैरम खाँ पर आक्रमण कर दिया। मुबारक ने पीछे से बैरम खाँ को छुरा भोंक दिया और उसके एक साथी ने बैरम खाँ के सिर को धड़ से अलग कर दिया। इस प्रकार बैरम खाँ की जीवन–लीला समाप्त हो गई और सम्राट अकबर का स्वतत्र शासन आरम्भ हो गया।

❑❑

## इस्लामी अख़्लाक....

और जगह–जगह कुर्आन व हदीस में मना किय गया है पवित्र कुर्आन में है "और विषयवासना (ख्वाहिशे नफ्सानी) की पैरवी न करो कि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से हटा देगी।" अन्य स्थान पर है "ऐ पैगम्बर (सन्देष्टा) क्या तूने उसको देखा जिसने अपनी नफ्सानी ख्वाहिश को अपना खुदा बना रखा है।

## अल्लाह की महब्बत

दीन–दुनिया का सबसे बड़ा धन प्रेम और प्यार है विशेषतः वह प्रेम जो खुदा को अपने बन्दे के साथ हो इस प्रेम का उल्लेख तो सभी जगह मिल जाता है लेकिन उसे प्राप्त करने का माध्यम क्या हो उसका जवाब कुर्आन ने दिया है "कह दो यदि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो मेरी पैरवी करो, खुदा तुमसे प्रेम करेगा। (आले–इमरान)

इसलिये हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षा, उपदेश, आदेश की पैरवी अल्लाह से प्रेम का सबसे बड़ा माध्यम है। कुर्आन ने विशेष तौर से उन विशेषताओं की निशानदेही भी कर दी है जो अल्लाह की महब्बत को अपनी ओर खींचती है। आस्था, उपकार, प्रायश्चित, भरोसा, न्याय, भय, सन्तोष, पवित्रता, जेहाद और इसी प्रकार उन विशेषताओं को खोल कर बयान कर दिया है जो इन्सान को ईश्वरीय प्रेम (महब्बते इलाही) से वंचित करते हैं।

जारी.....

❑❑

## खारा पानी से काला पानी

"मौजूदा हालात में मुस्लिम खवास की दावती जिम्मेदारियों और नई नस्ल के लिये हमारे फराइज" टापिक पर बात की। अल्लाह का शुक्र है कि बड़े पुर सुकून माहौल में गुफतगू हुई और लोगों ने तवज्जुह से सुना। चौथे रोज हम लोग किंग फिशर जहाज से वापस चुनई आ गये।

इन्डोमान के इस तीन रोजा सफर से मुझ पर जो मजमूई तअस्सुर काइम हुआ वह यह कि हम हिन्दोस्तानियों को खुद अन्दाजा नहीं है। कि खुद हमारे मुल्क में किस तरह के कुदरती हसीन व दिलकश मनाजिर अल्लाह तआला ने रखे हैं। इन्डोमान के जजीरे अगर यूरोप में होते तो यहाँ के लोग लाखों रूपया खर्च कर के वहाँ जाकर लुत्फ अन्दोज होते, यहाँ का मौसिम मुअ़तदिल (मध्य) है, बारिश खूब होती है। पहाड़ियों पर बने मकानात देखने से तअल्लुक रखते हैं। चारो तरफ से वहरे हिन्द की खुशगवार हवाएं उस के लुत्फ को दोबाला करती हैं। जिस ने कहा सच कहा "घर की मुर्गी दाल बराबर" सुइजर लैन्ड से जियादा खूबसूरत मनाजिर वादीए कशमीर में हैं ग्रीन लैन्ड से जियादा खुशगवार फजा इन्डोमान की है लेकिन हम को खुद पता नहीं कि कुदरत ने खुद हमारे घर के अन्दर क्या–क्या रखा है। (माहनामा हिदायत जैपूर के शुक्रिये के साथ)

❑❑

दूसरी किस्त

# स्वतंत्रा संग्राम में नदवतुलउलमा से जुड़े लोगों की भूमिका

अनुवाद - हबीबुल्लाह आज़मी

अब्दुल वकील नदवी

हिन्दोस्तान की स्वतंत्रता का इतिहास लिखा जाए और मौलाना अबुलकलाम आजाद का नाम न आये तो ऐतिहासिक दृष्टकोण से स्वंत्रता का संयुक्त नारा कभी सफल नहीं हो सकता था और कांग्रेस का राजनीतिक अस्तित्व (सियासी वजूद) कभी का मिट चुका होता क्यों कि देश में कांग्रेस की जो राजनीतिक भूमिका है वह मौलाना की देन है और उनके नेतृत्व का परिणाम है। कहने का तातपर्य यह है कि मौलाना की राजनीतिक कौमी मिल्ली पत्रकारिता, उन के ज्ञान वर्धन और लेखन और भाषण की जो सेवाएं हैं उन से देश का कोई बुद्धिमान वर्ग इन्कार नहीं कर सकता। उस समय आपकी पत्रकारिता की भाषा व साहित्य का पूरे हिन्दुस्तान में डण्का बज रहा था और बचपन ही में आप के लेखों की चर्चा कमाल की ऊँचाईयों तक पहुँची हुई थी यहाँ तक कि हर समाचार पत्र व पत्रिकाएं चाहती थीं कि मौलाना के लेख मेरे समाचार पत्र की शोभा बनें बल्कि उस समय के बहुत से समाचार पत्रों के सम्पादक की इच्छा होती थी कि मौलाना मेरे समाचार पत्र का संपादक होना स्वीकार करें। यही कारण था कि अल्लामा शिबली जैसा ज्ञानी व बुद्धिमान भी मौलाना आजाद को "अल–नदवा" के सम्पादन की दावत दे बैठा।

लेकिन मौलाना आजाद का इजतिहादी जेहन (नयी विचार धारक जेहन) अल्लामा शिबली की दावत को रद्द नहीं कर सका और वह लगभग छः महीने तक "अल–नदवा" के संम्पादक रहे और यह सब कुछ मौलाना आजाद का नदवा की विचार धारा से सहमत का नतीजा था और इस में कोई दो राय नहीं कि मौलाना नदवतुल उलमा की विचारधारा से बहुत प्रभावित थे और अपनी जिन्दगी में हमेशा नदवा की सहायता करते रहे। इसी तरह मौलाना आजाद नदवतुल उलमा का इलमी लिहाज से (शैक्षिक लिहाज) चोली दामन का साथ था और लखनऊ कौंसिल हाल में 22 फरवरी 1946 को आयोजित अरबी पाठयक्रम के कनवेनशन में जिस भावना के साथ नदवा पाठयक्रम का जोरदार समरथन किया इस से अन्दाजा होता है कि मौलाना को नदवतुल उलमा आन्दोलन के इस नये लाभप्रद कदम से किस कदर लगाव था। मौलाना अपने वक्तव्यी निबन्ध (तकरीरी मकाला) में इस को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि इस विषय को किसी अनजुमन ने उठाया तो वह नदवतुल उलामा है जिसका बुन्यादी उद्देश्य पाठयक्रम का सुधार है और अब तक नदवतुल उलमा ने इस सिलसिले में जो बहुमूल्य सेवाएं संपन्न की हैं वह हमेशा इस विषय को सुलझाने में सहायक होंगी।

यह लम्बानिबन्ध और नदवतुल उलमा का महत्व अपनी जगह पर इस के अंतिरिक्त मौलाना ने अपने शिक्षा मंत्री काल में नदवा को ग्रान्ट देने की जोरदार सिाफारिश की जिस को नदवा के अहलकारों ने परिस्थितियों को देखते हुए अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार मौलाना आजाद का नदवा के लोगों और खास तौर से अल्लामा शिबली की शफकते इलमी (शैक्षिक कृपा), अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी की दूरदर्शिता, हकीम अब्दुल अली राय बरेलवी के कुशल प्रबन्ध, मौलाना मसऊद अली नदवी बाराबंकवी के दोस्ताना सम्बन्ध, मौलाना अब्दुस्सलाम आजमी नदवी की कलमी मजबूती से जो सम्बन्ध था वह बहुत नजदीकी और अपनायत का था।

यही नजदीकी का नतीजा था कि मौलाना जब भी भारत की स्वतंत्रा के लिए जेल में होते तो अलबलाग और अलहिलाल पत्रिकाओं का सम्पदकीय कार्य अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी और मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी आजमी संभालते

और ऐसे संपादकीय लेख लिखते कि पढ़ने वालो को पता ही नहीं चलता कि लेख किसका है इस्लाम के महा विचारक सैयद अबुल हसन अली नदवी की कम उमरी और आप से सम्बन्ध और मुहब्बत का इजहार किसी से छुपा हुआ नहीं है। मौलाना खुद फरमाते हैं कि मुझे जब भारत सरकार की तरफ से अरब देश या मिस्र जाना होता तो उलमा–ए–हिन्द का कारनामा व सेवाओं के उन लोगों के सामने सैयद अब्दुल हयी रायबरेलवी की लिखी पुस्तक "नुजहतुल खवातिर" को पेश कर के गर्व महसूस होता और इस में कोई संकोच नहीं कि मौलाना की इच्छाओं व सहयोग से नुज़हतुल खवातिर का नया एडीशन हैदराबाद से प्रकाशित हुआ जिस का जिक्र मौलाना अलीमियाँ नदवी (रह0) ने "पुराने चिराग" में किया है जब कि नदवतुल उलमा के विद्यार्थियों की संस्था जमीयतुल इस्लाह की कारकरदगी उस की सेवाओं की प्रशंसा करना और खातून मंजिल और अल्लामा शिबली के घर पर ठहरने को वरीयत देना इस की अहमियत को उजागर करना है।

कहने का तातपर्य यह है कि नदवतुल उलमा और मौलाना आजाद की सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता और नदवतुल उलमा की विचार धारा से सहमत रखने वाले उलमा में मौलाना आजाद की गिनती स्वतंत्रा संग्राम में एक नये बाब (अध्याय) का इजाफा है जो नदवा के लिए और नदवा वालो के लिए एक स्थाई शीर्षक (मुस्तकिल उनवान) है जिस को समझना नदवा बिरादरी का कारनामा है।

*जो बढ़कर खुद उठाले हाथ में*
*मीना उसी की है*

## नदवतुल उलमा के अध्यक्ष मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी की सवतंत्रा संग्राम में भूमिका

मोलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी का नदवतुल उलमा से जो दिली लगाव था उस को मौलाना अबुल हसन अली नदवी कुछ यूं लिखते हैं कि नदवतुल उलमा के गौरववान विद्यार्थियों में अल्लामा शिबली से ऐसे गहरे सम्बन्ध थे कि उन को इसी इलमी फिक्री खानदान (शैक्षिक विचारक कुटुम्ब) का एक व्यक्ति और बज्म शिबली का एक सदस्य कहना सही होगा। उन का इस दारुल उलूम से इतना पुराना सम्बन्ध रह चुका है और अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी मौलाना अब्दुल बारी नदवी, मौलाना मसऊद अली नदवी, हकीम अब्दुल अली हसनी से इस तरह घुले मिले और नदवा की बहुत सी विशेषताओं के वाहक (हामिल) रहे हैं कि नवाब सदर यार जंग, मौलाना हबीबुर्रहमान खाँ शेरवानी को यह ख्याल हुआ कि वह दारुल उलूम के नियमित विद्यार्थी रहे हैं यद्यपि आप नदवा कार्यकार्णी के एक जमाने में अध्यक्ष रहे इस लिहाज से नदवतुल उलमा से आप के सम्बन्ध नदवा के इतिहास का एक सुनहारा अध्याय है।

इसी कारण 1925 ई0 में तलबा–ए–कदीम (पूर्व निद्यार्थियों की संस्था) ने एक सभा कर के उन्हें एजाजी नदवी (Honorary Nadvi) की उपाधि प्रदान की और वह जमीयतुलइसलाह के ज़लसों में स्वागत और समारोह के अध्यक्ष भी कई बार चुने गये। स्वतत्रा संग्राम में भी देश प्रेम के जज्बे के साथ आप की महत्वपूण भूमिका रही। इस के अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली जौहर के चाहने वाले, मौलाना अबुल कलाम से पत्र व्यवहार अल्लामा सुलैमान नदवी के जैसे महान शखसीयत से सम्बन्ध के अतिरिक्त खिलाफत आन्दोलन में नियमित तौर पर जो हिस्सा लिया उस के बारे में मौलाना माजिद खुद अपने एक लेख जो चन्द यादों के नाम से प्रकाशित हुआ लिखते हैं कि मौलाना अबुल कलाम आजाद खिलाफत के अध्यक्ष (सदर) थे और यह सेवक भी अपने प्रान्त अवध की खिलाफत कमेटी का सदर था जिस के सालाना जलसों के अतिरिक्त केन्दीय खिलाफत कमेटी का सदस्य और फिर खिलाफत कार्यकारणी (मजलिसे आमिला) के जलसे जो लखनऊ, कानपुर और दिल्ली में होते उसमें बार–बार भाग लेने का उवसर मिला। इस प्रकार मौलाना माजिद और सियासी लीडरान से बहुत अच्छे सम्बन्ध थे।

स्वतंत्रा आन्दोलन के सम्बन्ध में आप के जो लेख प्रकाशित हुए वह काबिले रश्क और स्वतंत्रा के

इतिहास में महत्वपूर्ण हैं। मौलाना अपनी आप बीती में राजनीतिक जीवन पर व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि 1919 ई0 से खिलाफत आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन का जोर बढ़ा और मुझे गांधी जी और मौलाना मुहम्मद अली जौहर से जो लगाव था उस के तकाजे से इन जलसों में शरीक तो होने लगा लेकिन किसी अमली कदम पर आमादा न हुआ। अलबत्ता दिसम्बर 1925 ई0 में खिलाफत कमेटी के लिए चुनाव हुए तो इसरार करके लोगों ने सदर (अध्यक्ष) बना दिया फिर केन्द्री कमेटी का सदस्य हो गया फरवरी 1926 ई0 में लखनऊ में आयोजित खिलाफत के जलसे में मैं जब स्वागत कमेटी का सदर हुआ तो उसमें मैंने जो स्वागत भाषण पढ़ा तो मुहम्मद अली जौहर ने पेशानी और दाढ़ी के खूब बोसे लिये। उसके बाद बार बार जलसों में भाग लेता रहा। कामरेड और हमदर्द के राजनीतिक लेखों को मैं मुहम्मद अली जौहर से सम्बन्ध के कारण बड़ी दिलचस्पी से पढ़ता और उन्हीं को अपना नेता और मार्गदर्शक समझता रहा साईमन कमीशन के विरोध में कई जलसों में भाषण दिये और 1932 ई0 में जब जवाहरलाल नेहरु दौरा करने दरयाबाद आए तो उस मीटिंग की सदारत (अध्यक्षता) मुझे करनी पड़ी और 1916 ई0 में कांग्रेस अधिवेशन लखनऊ में शरीक हुआ।

बाद में मौलाना ने लेखन और संकलन (तस्नीफ व तालीफ) को अपना दोस्त बना लिया और नदवतुल उलमा से आप का जो अटूट सम्बन्ध था वह अन्तिम घड़ी तक बरकरार रहा यहाँ तक कि 16 मार्च 1977 ई0 को आपका पंख पखेरु उड़ गया और आप की नमाजे जनाजा नदवा के लम्बे चौड़े मैदान में मौलाना अलीमियाँ नदवी ने पढ़ाई और फिर जनाजे को उन के जन्म स्थान लाया गया।

जारी.....

❑❑

## 45 साल की आयु के बाद व्यायाम का महत्त्व दो गुना

लन्दन विशिष्ट चिकित्सकों ने कहा है कि 45 साल बाद व्यायाम की अहमियत और बढ़ जाती है– जो व्यक्ति जागिंग तैराकी या इसी प्रकार के दूसरे व्यायामों में लगे रहते हैं उनको तुरन्त मृत्यु से 57 प्रतिशत कम वास्ता पड़ता है। विशेषज्ञों ने कहा है कि व्यायाम का वर्क सबसे अधिक भार कम करने के लिये लाभदायक होता है : जिससे दरजनों रोगों का अन्त हो जाता है। उन में ब्लड प्रेशर और सुगर स्पष्ट हैं उसे पश्चात हृदय रोग और नालियों की तंगी से फालिज की बीमारी भी है। हेमपशायर पेड़ीसियन इनिस्टीट्यूट के द्वारा होने वाली इस जानकारी में 3298 बूढ़े व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया गया जिसमें हर रंग और नस्ल के व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया था विशेषज्ञों ने देखा कि व्यायाम करने से पुरुषों की निसबत महिलाओं को अधिक लाभ होता है पुरुषों में यह 20 प्रतिशत जबकि महिलाओं में 37 प्रतिशत तक रिकार्ड की गई।

❑❑

## जिक्र मिलादुन्नबी.....

बीवी बोली आप घबराओ नहीं
देखेंगे हम आज बरकाते नबी
की दुआ जाकर रसूलुल्लाह ने
बख़्श दी बरकत तो फिर अल्लाह ने
खाने वालों का वहाँ था यूं शुमार
कम से कम गिन्ती थी उनकी इक हज़ार
फ़ज़्ले रब से सब ने खाया सेर हो
मुअ़जिज़ा था ये नबी का यूं कहो
और सुनाता हूँ सुनो इक मुअ़जिज़ा
आपके घर इक प्याला दूध था
बू हुरौरा भूके वाँ मौजूद थे
सुफ़्फ़ा वाले सुफ्फा पर मौजूद थे
बू हुरैरा से बुला भेजा उन्हें
बू हुरैरा जा बुला लाए उन्हें
एक इक कर के पिया उस दूध से
हो गये सब सेर पीकर दूध से
बू हुरैरा की भी बारी आ गई
पीते पीते साँस ऊपर आ गई
और पीने को नबी ने फिर कहा
अब वो बोले पेट बिल्कुल भर गया
पुर प्याला था अभी तक दूध से
नोश फ़रमाया रसूलुल्लाह ने
आप के तो हैं हजारों मुअ़जिज़े
हैं हदीसों की किताबों में लिखे
आप तो हैं रहमतुल्लिल आलमीं
और हैं बेशक शफ़ीउल मुज़नबीं
हो शफ़ाअ़त आप की हम को नसीब
सुन ले मेरी ये दुआ तू या मुजीब
रहमते आलम पे या रब अस्सलाम
उन की आल औलाद पर भी अस्सलाम
उनके सब अस्हाब पर भी अस्सलाम
अस्सलामो अस्सलामो अस्सलाम

❑❑

किस्त 20

# हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|
| ख़ावर | सूर्य | ख़ुदा दाद | ईश प्रदत्त | ख़ुरूज | विद्रोह |
| ख़ाविन्द | पति | ख़ुदावन्दे आलम | जगदीश्वर | ख़रीद | क्रय |
| ख़ाइफ़ | भयभीत | ख़दशा | आशँका | ख़रीदार | ग्राहक |
| ख़ाइन | कपटी | ख़िदमत | सेवा | ख़रीता | थैली |
| ख़बासत | दुष्टता | ख़िदमतगार | सेवक | ख़रीफ | सावनी |
| सबर | सूचना | ख़र | गदहा | ख़िजाँ | पतझड़ |
| ख़बरदार | सावधान | ख़राब | विकृत | ख़रोश | कौलाहल |
| ख़बरदारी | सावधानी | ख़राबात | मद्यालय | ख़जानची | कोषाध्यक्ष |
| ख़बर रसाँ | संवाद दाता | ख़राबा | जन शून्य स्थान | ख़जाना | कोषागार |
| ख़बर गीरी | रक्षा | ख़राबी | विकार | ख़जफ | ठीकरी |
| ख़ब्त | सनक | ख़िराज | राज्स्थ कर | ख़सारा | हानि |
| ख़ब्ती | पागल | ख़ुराफ़ात | व्यर्थ | ख़स्ता | दरिद्र |
| ख़बीस | दुष्ट | ख़राम | विचरण | ख़स्तगी | दरिद्रता |
| ख़बीस रूह | दुष्टात्मा | ख़रामाँ | विचरित्र | ख़स्ता | भुर भुरा |
| ख़त्म | समाप्त | ख़र्च | व्यय | ख़स्तगी | भुरभुरापन |
| ख़जालत | लज्जा | ख़िरद | बुद्धि | ख़ुसुर | श्वशुर |
| ख़जिल | लज्जित | ख़िरदमन्द | बुद्धिमान | ख़ुसरान | हानि |
| ख़ुदा | ईश्वर | ख़र्कआदत | अस्वाभाविक | ख़सरा | क्षेत्र पुस्तक |
| ख़ुदा परस्ती | ईश्वर भक्ति | ख़ुर्रम | प्रसन्न | ख़सरा | एक बीमारी |
| ख़ुदा तर्सी | इश्वर भय | ख़िरमन | ख़लियान | ख़सूफ़ | चन्द्र ग्रहण |

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

# अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

## वीर बहादुर ने रामजन्म भूमि का ताला खोलने को कहा था

**कानपुर!** अगर पूर्व आईएएस अधिकारी कमल टावरी की बात का यकीनकरें तो वर्ष 1985 में उने फैजाबाद के कमिश्नर के कार्यकाल में तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह ने उनसे रामजन्म भूमि का ताला खोलने के लिए कहा था, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया तो फैजाबाद के कमिश्नर पद से हटा कर उन्हें खादी बोर्ड में भेज दिया था। कानपुर प्रेस क्लब में 'प्रेस से मिलिए' में यह रहस्योघाटन करते हुए श्री टावरी ने कहा कि जब मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह ने रामजन्म भूमि के ताला खोलने की बात कही तो उन्होंने यह जवाब दिया कि इससे देश में हंगामा और खून खराबा होगा। किसी भी हालत में जन्म भूमि का ताला नहीं खोला जा सकता। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें फैजाबाद के मण्डलायुक्त पद से हटा दिया गया।

## हमारे मामलों में न पड़ें अमेरिका–चीन : भारत

**नई दिल्ली!** भारत–पाकिस्तान के संबंध सुधारने के लिए चीन की भूमिका की वकालत करने वाले हूं जिंताओ और ओबामा के संयुक्त बयान ने भारत को चिंता में डाल दिया है। चीन और अमेरिकी राष्ट्रपति के दिए गए बयान को भारत ने गंभीरता से लिया है। साथ में दो टूक कह भी दिया कि इस मामले में किसी तीसरे देश की कोई भूमिका नहीं हो सकती।

विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि हमारा देश पाकिस्तान के साथ लंबित मामलों के निपटाने के लिए शिमला समझौते के तहत द्विपक्षीय शांतिपूर्णबातचीत के लिए प्रतिबद्ध है। इस संबंध में तीसरे देश की भूमिका आवश्यक नहीं है। एक पूर्व भारतीय राजनयिक के मुताबिक चीन और अमेरिका के संयुक्त बयान ने भारत को चोट पहुँचाई है।

## महामहिमों का खर्च बढ़ा

राष्ट्रपति के वेतन–भत्तों के लिए 38 लाख! **बजट** प्रस्तावों के मुताबिक राष्ट्रपति भवन पर खर्च में 2009–10 में 37.6 फीसदी की वृद्धि संभावित है, वहीं उप राष्ट्रपति सचिवालय पर इसी अवधि में 38.46 फीसदी ज्यादा खर्च का प्रावधान किया गया है।

राष्ट्रपति के वेतन भत्तों के लिए 2008–09 में छह लाख रुपए का प्रावधान किया गया था। वह इस साल 38 लाख रुपए हो जाएगा। वहीं, पिछले के बजट प्रस्तावों के मुताबिक राष्ट्रपति भवन का कुल खर्च 20 करोड़ रुपए रहा जो अब 27.52 करोड़ रुपए हो जाएगा। इसी तरह, उप राष्ट्रपति के सचिवालय का खर्च 1.69 करोड़ से बढ़कर 2.34 करोड़ रुपए हो जाएगा। लोकसभा के लिए 18.74 प्रतिशत ज्यादा व्यय का प्रावधान किया गया है। लोकसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के वेतन भत्तों में 45 फीसदी की वृद्धि हुई है, वहीं विपक्ष के नेता पर 37.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। लोकसभा सचिवालय पर खर्च 51.7 प्रतिशत बढ़ा है। राज्यसभा के लिए जहाँ सभापति और उप सभापति के वेतन भत्ते 25.42 फीसदी बढ़ाकर 74 लाख रुपए करने का प्रस्ताव है।

राज्यसभा का कुल व्यय 40.21 फीसीद बढ़ाकर 160.64 करोड़ रुपए प्रस्तावित किया गया है। सबसे ज्यादा 114 फीसदी का इजाफा सचिवालय पर होना है, जो 39.79 करोड़ से बढ़कर 84.97 करोड़ रुपए हो जाएगा।

## अमेरिका में छह और बैंक चढ़े मंदी की भेंट

**वाशिंगटन!** अमेरिका में छह और बैंक आर्थिक मंदी की भेंट चढ़ गए हैं। इसके साथ ही देश में इस वर्ष धाराशाई होने वाले बैंको की संख्या बढ़कर 130 हो चुकी है।

बैंक नियामकों ने जार्जिया के तीन बैंकों और ओहियो, वर्जीनिया और इलिनाय में एक–एक बैंक को बंद करने का आदेश जारी किया। इसके साथ ही जार्जिया में इस वर्ष बंद होने वाले बैंकों की संख्या 24 हो गई है। बैकों के वित्तीय लेखे जोखे का सुरक्षा प्रबंधन करने वाले फेडरल डिपाजिट इंश्योरेस कारपोरेशन ने कहा है कि कि सरकार की ओर से जारी रोजगार आँकड़ों उम्मीद से बेहतर रहने से अर्थव्यवस्था में सुधार के संकेत मिले हैं लेकिन बैंकिंग क्षेत्र को मंदी से उबरने में वक्त लगेगा। बंद होने वाला सबसे बड़ा बैंक ओहियों के क्लीवलैंड स्थित एमट्रैक बैंक रहा। इस बैंक की कुल परिसंपत्ति 12 अरब डॉलर है।

❑❑